समय
के
साये

इस नाटक के मचीकरण से पूर्व
नाटककार की अनुमति ले लेनी चाहिए

सम्पर्क
अनुराग
1 स 22, पवनपुरी, बीकानेर-334003

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

विकास प्रकाशन
4 चौधरी क्वार्टर्स, स्टेडियम रोड, बीकानेर

समय के साये

(हिन्दी नाटक)

निर्मोही व्यास

समर्पण

अनुराग कला केन्द्र बीकानेर की रग गतिविधियो मे मेरे अन्तरग साथी रहे स्व. प्रो यतीश शर्मा, स्व. श्री योगेन्द्र प्रकाश शर्मा 'योगी एव स्व.श्री सत्यनारायण गुप्ता को मेरी यह नई नाट्यकृति भरे हृदय से समर्पित है जिनके रगमचीय योगदान को मैं कभी भूला नहीं सकूगा।

– निर्मोही व्यास

लेखकीय

नाटक जीवन के शाश्वत प्रश्नों से लोहा लेते हुए ऐसे तत्वों से साक्षात्कार करवाता है जिनकी तलाश में आज का आम आदमी यत्र–तत्र भटकता सा नजर आता है। वस्तुत समाज का सही मार्गदर्शन करने मे नाटक जिस तरह की महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है वैसी अन्य किसी से भी अपेक्षा नहीं की जा सकती।

अतीत के उन सभी मान बिन्दुओ को समाज के सामने रखना आज की अनिवार्यता है जिनसे समाज सचमुच ही गौरवान्वित हो सके।

मैंने अपने इस नये नाटक 'समय के साये' मे सकीर्ण सोच के कारण उपजती उन अर्थहीन बातों को उजागर करने का प्रयास किया है जो अनायास ही पति–पत्नी के रिश्ते में सन्देह की सूइया चुभोने को उतारू हो जाती हैं।

रगमच की कुछ अपनी सीमाए होती हैं और इस नाटक की रचना उन्हीं सीमाओं को ध्यान में रखते हुए रची गई है।

– निर्मोही व्यास

अनुराग
1 स 22, पवनपुरी
बीकानेर–334003

भूमिका

'समय के साये' श्री निर्मोही व्यास का नया रग नाटक है। वे इससे पूर्व आज के चार नाटक' अनामिका आधी रात का सूरज एव 'कथा एक रगकर्मी की आदि नाटको के माध्यम से रगकर्मियो और नाटककारो मे अपना विशिष्ट स्थान बना चुके हैं।

'समय के साये दो परिवारो की कहानी है जो सन्देह की छाया मे अपने जीवन को कुंठित किये हुए हैं। एक परिवार नवीन का है जो बैंक अधिकारी है पर दुर्घटनाग्रस्त होकर घर मे व्हील चेयर पर पडा है और अपनी विकास अधिकारी पत्नी महिमा पर शक करता रहता है। यही स्थिति उसके मित्र प्रो विकास के परिवार की है जिनकी पत्नी ममता अपने पति की गतिविधियो को सन्देह की दृष्टि से देखती है। दोनों ही परिवार अपने-अपने तनावों में घिरे हुए है।

आज का हिन्दी नाटक रगबोध की सम्पूर्ण क्षमताओ को लिये हुए हैं। वह कोरी साहित्यिकता को प्रश्रय नहीं देता अपितु उसमे रगमचीय सम्भावनाओ की तलाश भी करता है। सस्कृत नाटको की अनेक शैलियो को पुनर्जीवित करने का प्रयास भारतेन्दु काल से ही शुरू हो गया था किन्तु उनमे समसामयिक रग विधान को भी उकेरने के प्रयास भी हुए। समकालीन नाटककार सभी प्रकार की रग शैलियो से परिचित होने के कारण नाटको मे नये-नये प्रयोग भी करते रहते हैं पर कई बार नाटक अधिक बौद्धिक और जटिल भी हो जाते हैं। नाटक का सीधा सम्बन्ध प्रेक्षकों से होता है अत प्रभविष्णु बनाने के लिए कथ्य के अनुरूप रगविधान की कल्पना करनी पडती है।

समकालीन अनेक नाटको का प्रारम्भ सूत्रधार के वक्तव्य से होता है और वही सूत्रधार नाटक का एक पात्र भी बन जाता है। सूत्रधार का कथन नाटक के पात्रो का स्थूल परिचायक भी हो सकता है और उनके अन्तर्द्वन्द्व का भी। 'शतुरमुर्ग (ज्ञानदेव अग्निहोत्री) मे सूत्रधार के माध्यम से प्रस्तावना प्रस्तुत की गई

है। 'समय के साये मे भी यही शैली अपनाई गई है। भोलाराम सूत्रधार के रूप मे शब्दो की सक्षिप्त माला फेरता है और प्रमुख पात्रो से प्रेक्षको को परिचित भी कराता है। इस काम को वह सफलतापूर्वक करता दिखाई देता है।

पात्रो का अन्तर्द्वन्द्व सदा नई कथा–स्थितियों को जन्म देता है। नवीन हर समय महिमा के बारे मे 'नेगेटिव सोचता है और हर बात को अपने ही अर्थ मे लेने को आतुर रहता है। फलत उसकी आखो मे नींद को जैसे लकवा मार गया हो और भीतर ही भीतर कडवाहट का जैसे करट दौड रहा हो मन आखेट का अडडा सा बन गया है। इधर विकास के सम्बन्ध मे ममता की आखो में सन्देह की परछाइया घिरी रहती है। विकास कहता भी है– 'सन्देह का पौधा यदि एक बार अकुरित हो जाये तो फिर वो घटने का नाम नहीं लेता बल्कि दिन पर दिन बढता ही जाता है। और सन्देह का बीज भी तो सदेह से ढका हुआ होता है जिसका अहसास करना सहज नहीं होता।

महिमा समझदार पात्र है जिसे विश्वास है कि जीवन की असली धुरी 'विश्वास' है और यह विश्वास ही आपसी रिश्तो को बनाये रखता है। किन्तु न तो नवीन इस बात को शुरू में समझ पाता है और न ही ममता। भीतर की घुमडन को जितना भी दबाया जाता है वह उतनी ही विस्फोटक होती जाती है।

नये नाटको मे दाम्पत्य जीवन को लेकर बहुत कुछ कहा गया है। कई बार पत्नी भीतर ही भीतर जलते हुए भी अपने धुए को बाहर नहीं आने देती जबकि पति बात–बात पर अपनी भीतरी आग को सामने लाता रहता है। कई बार इसका विपर्यय भी होता है। नवीन और विकास के परिवार क्रमश इसके उदाहरण हैं।

कई बार नाटकीय अन्तर्द्वन्द्व अति सूक्ष्म होता है और इसका प्रभाव भी अलग पडता है। प्रस्तुत नाटक का प्रभाव इसलिए अलग है क्योंकि इसमे अन्तर्द्वन्द्व की स्थितिया अपेक्षाकृत स्थूल और मुखर है। इससे चारित्रिक सूक्ष्मता की व्यजना अवश्य हुई है। एक उदाहरण से यह बात स्पष्ट होगी–

नवीन मर्द अपनी कमजोरियो से अधिक कभी कमजोर नहीं होता।

महिमा यह तो आपसे अधिक कौन जान सकता है ?

नवीन यह तो स्वीकार करता है कि वह महिमा की तुलना में बौना लगता है किन्तु स्वाभिमान से समझौता करने को तैयार नहीं है और न ही गम के गलियारे मे बैठकर बुदबुदाने को तैयार है।

ममता झूठ से घृणा करती है तो विकास औरत की ईर्ष्या से। ममता चाहती है कि मर्द को अपना हृदय भी टटोलना चाहिए। वह सस्कारशील तो है किन्तु वक्त से पिछड़ना भी नहीं चाहती। इसलिए विधवा अरुणा से विवाह के लिए महेश को तैयार करती है किन्तु अपने ही जीवन की कटीली राहों को तुरन्त बुहार नहीं पाती और मायके जाने को तैयार हो जाती है। नाटककार ने दोनो परिवारों के सन्देहों को दूर करने के लिए अहकार और स्वाभिमान के सघर्ष के बीच प्रेम

के पुष्प खिलाने की बात कही है। स्पष्टोक्ति से ही मन की गाठे खुल सकती है और पति–पत्नी के बीच चल रहे शीतयुद्ध को समाप्त किया जा सकता है। कभी–कभी हथियारों की टकराहट सुनाई दे तो विशेष बात नहीं किन्तु युद्ध जैसे हालात नहीं बनने चाहिए। पुरानी बातों को किसी गठरी मे बाधकर कहीं अलग रख देने मे ही समझदारी है।

निर्मोहीजी ने पी एच डी कराने वाले प्रोफेसरो की पोल खोली है– 'वहा तो लडकियों को कुछ न कुछ समर्पण करन के लिए भी तैयार रहना पडता है। ऐसे महान् प्रोफेसरा के साथ–साथ छात्राए भी कम दोषी नहीं है जो सब जानते हुए भी वहा जाती है।

इस सुखान्त नाटक मे निर्मोही जी के विविध अनुभवो तथा अनुभूतियो को देखा जा सकता है। रगकर्मी निर्देशक तथा नाटककार तीनों के समन्वित रूप में निर्मोही जी सामने आये हैं। उन्होने सवेदनात्मक तल पर साहित्य दर्शन मनोविज्ञान समाशास्त्र सभी को एकत्र किया है और इन्हीं के ताने–बाने मे कथा को बुना है। दाम्पत्य जीवन की अतरगता को मुख्य स्वर देते हुए उसके विघटन के तत्वो की भी खुलकर चर्चा की है किन्तु इस कथ्य में शब्द सामर्थ्य का पूरा उपयोग किया है।

इस नाटक मे दृश्य कथा और सूच्य कथा मे कहीं भी अन्तर्विरोध परिलक्षित नहीं होता। कथा में अनिवार्य माड भी है और उन मोडो की सारगर्भित परिणति भी। नाटक में केन्द्रीय मुद्दा सन्देह है जो नाटक के दृश्यो–अको के साथ ही आगे बढता है और उसका आवरण भी धीरे–धीरे खुलता जाता है। यही नहीं प्रेक्षको के सम्मुख अनेक रग भी उघडते जाते हैं। एक ही मुद्दा दोनो परिवारो मे छाया रहने के बावजूद भी कथा में कहीं नीरसता नहीं झलकती यही इस नाटक की उल्लेखनीय विशेषता है।

इधर मच चेतना का जबर्दस्त विकास हुआ है। नाटय परम्पराओ को ग्रहण करते हुए भी आज का नाटककार दृश्य परिवर्तन के लिए अनेक युक्तिया अपनाता है किन्तु निर्मोहीजी ने व्यजना की अपेक्षा अभिधा शब्द शक्ति का सहारा अधिक लिया है इसी कारण पाठक/दर्शक प्रत्यक्ष दृश्य मे ही अधिक रससिक्त होते हैं उन्हे किसी व्यजित दृश्य की परिकल्पना नहीं करनी पडती। दृश्य बध एकसूत्रता में जुडे हैं। विडम्बनापूर्ण स्थितियो की अभिव्यक्ति हो पाई है और नाटक की मार्मिकता कहीं खण्डित नहीं हुई है।

मुझे विश्वास है कि निर्मोहीजी के अन्य नाटको की तरह ही हिन्दी जगत 'समय के साये का भी भरपूर स्वागत करेगा।

— डॉ मदन केवलिया

प्रतिमा
सी 68 सादुलगज
बीकानेर–334003

पात्र

नवीन	–	एक दुर्घटनाग्रस्त बैंक अधिकारी
महिमा	–	नवीन की पत्नी
विकास	–	नवीन का दोस्त
ममता	–	विकास की पत्नी
महेश	–	महिमा का ममेरा भाई
भोलाराम	–	नवीन का घरेलू नौकर
चेतन	–	नवीन का छोटा भाई (अपंग)
संजय	–	एक छात्रा का भाई

एक

(शाम का समय। नवीन का ड्राइंग रूम। भोलाराम अन्दर से आता है और एक तरफ खडे होकर सूत्रधार के रूप में शब्दो की सक्षिप्त माला फेरता है।)

भोलाराम – **(दर्शकों से)** नमस्कार। मैं भोलाराम इस नाटक के नायक नवीन बाबू का घरेलू नौकर। यहा तब से टिका हुआ हू जबसे बाबूजी ने अपनी नवविवाहिता महिमा मेमसाहब के साथ इस मकान मे प्रवेश किया था। हो गये होगे इस बात को करीब नौ दस साल।

बाबूजी यहा बैंक अधिकारी हैं और मेमसाहब है राज्य सरकार में स्थानीय विकास अधिकारी। सहायक जिलाधीश श्री पाडे जी के अधीन।

उल्लेखनीय बात यह है कि बीस रोज पहले बाबूजी का स्कूटर एक ट्रक से टकरा गया था जिसके कारण उनका बाया हाथ और बाया पैर बुरी तरह जख्मी हो गये। हाथ तो अब ठीक है मगर पैर अभी भी काम नहीं कर रहा। तीन जगह फ्रेक्चर होने से पेर को ठीक होने मे सभवत दो–तीन महीने और लगेगे।

मेमसाहब बाबूजी का हर प्रकार से ख्याल रखती हैं। यही नहीं उनके छोटे भाई चेतन की भी उनको बहुत चिन्ता रहती है। पोलियोग्रस्त चेतन सोलह–सतरह साल का हो गया लेकिन अभी तक न तो वह ठीक से बोल पाता है और न ही कोई समझ है उसमे।

बाबूजी के भी दो बच्चे हैं छ साल का पिंटू और चार साल की पिंकी। दोनों ही कुछ अरसे से अपने नाना–नानी के पास रहते हैं। दुर्घटना के बाद न जाने क्यों बाबूजी कुछ हताश और चिडचिडे से हो गये हैं। मेमसाहब से तो बात–बात पर तकरार कर बैठते हैं। इसी कारण अब यहा पहले जैसी शान्ति नहीं है।

दो दिन हुए मेमसाहब को सरकारी काम से अचानक राजधानी जाना पड गया। बस इसी बात को लेकर उनका क्रोध आसमान को छूने म लगा हुआ है। भला यह भी कोई बात हुई है। सरकारी नौकरी है। काम पडे तो बाहर भी जाना पडता। लेकिन हमारे बाबूजी की तो माया ही निराली है।

आज सुबह उन्हें चैक अप कराने अस्पताल जाना था। मैंने जब याद दिलाया तो अन्दर से उफनता गुस्सा मुझ पर ही उडेल दिया। यह तो अच्छा हुआ कि उसी समय विकास भैया आ गये और व किसी तरह समझा–बुझाकर उन्हे अस्पताल ले गये।

आप सोचेंगे यह विकास फिर कौन है ? तो मैं बता दू विकास भैया बाबूजी के एक खास मित्र हैं और यहा कॉलेज मे हिन्दी के प्रोफेसर हैं।

(इसी समय काल बैल बजती है)

लीजिए मेरी घटी बज गई। अच्छा नमस्कार।

(कहकर बाहर का दरवाजा खोलता है कि दाए हाथ से विकास का कधा पकडे एक पैर से लडखडाते हुए नवीन का प्रवेश।)

नवीन – **(भोलाराम से)** क्यो भोलाराम आ गइ तेरी मालकिन ? बहुत बढ–चढकर बोल रहा था न !

भोलाराम – जी अभी तक तो नहीं आयी।

नवीन – और आज आयेगी भी नहीं।

विकास – अभी इतना तेज बोलना जरूरी है क्या ?

नवीन – अरे यह बात नहीं है। इसे यह पूछ रहा हू कि यह इसने कैसे कह दिया कि वह अभी सुबह जरूर आ जायेगी ?

भोलाराम – वो तो मैं अभी भी कह रहा हू।

नवीन – **(व्हील चेयर पर बैठते हुए)** ज्यादा बकवास नहीं। अब कौनसी ट्रेन आयेगी इस वक्त जरा बताना तो ?

भोलाराम – ट्रेन तो अब कोई नहीं आने वाली मगर बसे तो चलती हैं।

नवीन – बस–बस रहने दे।

विकास – तुम भी खूब हो। हो सकता है रात को ट्रेन न मिली हो तो बस से क्यों नहीं आ सकती ?

नवीन – अरे बस से भी आती तो कभी की आ जाती। सच तो कुछ और ही है।

विकास – और फिर क्या सच हो सकता है ?

नवीन – यही तो बताने से बचना चाहता हू।

विकास – मैं समझा नहीं।

नवीन – न समझो तभी तक ठीक है।

भोलाराम – कुछ भी कहिये बाबूजी मुझे तो पूरा विश्वास है मेमसाहब आज हर हालत में लौट आयेगी।

नवीन – चुप रहो। बेमतलब ही अपनी कहे जा रहे हो।

विकास – नवीन तुम चाहे कितना ही नेगेटिव सोचो मन तो अन्दर से मेरा भी यही कह रहा है कि महिमा भाभी वहा बिना काम रूकने वाली नहीं है।

नवीन – तुम भी इस भोलाराम की बातो मे आ गये लगते हो ?

विकास – कतई नहीं। हा यह बात मैं जरूर नोट कर रहा हू कि तुम इन दिनों हर बात को अपने ही अर्थ मे लेने को आतुर हो जाते हो।

नवीन – कैसे ?

विकास – मैं पूछता हू, अभी वह आ क्यो नहीं सकती किसी बस से ?

नवीन – आ तो क्यों नहीं सकती। लेकिन आने का उसका मानस बने तब न।

विकास – क्या मतलब ? वे वहा कोई मौज मस्ती के लिए नहीं गई है जो एक दिन और ठहर जाये ?

नवीन – यह तो उसी से पूछना जब वह आये।

विकास – नवीन इन बातों मे कुछ नहीं धरा।

भोलाराम – विकास भैया आप बैठिये। मैं आप लोगो के लिए चाय बनाकर लाता हू।

नवीन – मेरे लिए मत बनाना।

विकास – मुझे भी कोई इच्छा नहीं है।

भोलाराम – आधा कप तो चलेगा।

विकास – पहले इसे पिलाओ ताकि यह थोडा शान्त हो।

नवीन – कह दिया न मुझे नहीं पीना।

भोलाराम – ऐसे कैसे चलेगा ? सुबह भी आपने कुछ भी नहीं लिया।

विकास – सुबह तो नहीं लिया कोई बात नहीं। चैकअप कराने जाना था। लेकिन अब तो पी सकते हो ?

नवीन — अभी नहीं। मूड बनेगा तब पी लूगा। (भोलाराम से) हा अब तुम यह बताओ उधर वो मेज टेढी क्यो पडी है ?

भोलाराम — जी चेतन ने खिसका दी थी।

नवीन — उसने यदि खिसका दी तो तुम क्या उसे वापस सही ढग से नहीं रख सकते थे ?

भोलाराम — जी गलती हुई।

नवीन — गलती नहीं यह तुम्हारी लापरवाही है। चेतन कहा है ?

भोलाराम — पीछे लॉन मे बैठा है।

नवीन — उसे खाना खिलाया या नहीं ?

भोलाराम — खिला दिया।

विकास — रिलैक्स ! अब थोडा आराम करो। तब तक मैं बाहर से इस पर्ची मे लिखी दवाइया लेकर आता हू।

नवीन — ले आओ।

(विकास का प्रस्थान)

भोलाराम — कहे तो आपके लिए कुछ ठडा ले आऊ ?

नवीन — कह दिया न कुछ नहीं लेना।

भोलाराम — अच्छा जी।

नवीन — चेतन पीछे लॉन मे कब गया था ?

भोलाराम — अभी थोडी देर पहले ही।

नवीन — नहला दिया था ?

भालाराम — जी।

नवीन — नहाते समय रोया तो नहीं ?

भोलाराम — नहीं। थोडी–बहुत न नहाने की जिद तो जरूर की लेकिन फिर चुपचाप नहा लिया।

नवीन — अच्छा किया।

भोलाराम — पता नहीं आज वो मेमसाहब का बहुत याद कर रहा है।

नवीन — न भी किया हो तो तुम ।

भोलाराम — ... नहीं–नहीं यह बात नहीं हैं। सचमुच वो उन्हें बहुत याद कर रहा है।

नवीन — ठीक है ठीक है। तुम कुछ ज्यादा ही उसके नाम की रट लगाये जाते हो। और मुझे यह बिल्कुल पसन्द नहीं है।

भोलाराम — बाबूजी लगता है आप मुझे अब कुछ गलत समझने लग गये। जबकि मेरे लिए आप और मेमसाहब दोनो एक समान है।

नवीन – यानि ।

भोलाराम – जितनी इज्जत मैं आपकी करता हू, उतनी ही उनकी।

नवीन – लेकिन चेतन को उसके नाम की पटटी किसने पढाई ?

भोलाराम – किसी ने नहीं। मेमसाहब को वो इस लिए याद करता है कि वे उसे बहुत प्यार करती हैं।

नवीन – ज्यादा होशियारी नहीं। मैं सब समझता हू।

भोलाराम – तो फिर साफ ही बताइये न आप कहना क्या चाहते हैं ?

नवीन – कुछ नहीं। बस मेमसाहब की ज्यादा तरफदारी करना छोड दो। यहा रहना है तो पहले मेरा कहा मानना होगा।

भोलाराम – आपका कहा भला मैंने कौनसा नहीं माना ? जरा यह तो बताइये। बेमतलब ही मुझ पर गुस्सा हो रहे हैं ।

नवीन – गुस्सा जिस रोज मुझे आ गया तो समझलो ।

भोलाराम – मैं नासमझ नहीं हू। ऐसी कोई नौबत आयेगी तब न ? मुझे इस घर में अब रहना ही नहीं है।

(कहकर अन्दर की ओर चला जाता है)

नवीन – **(आवाज देकर)** भोलाराम !

भोलाराम – **(अन्दर से ही)** मर गया भोलाराम।

नवीन – **(नरम पडते हुए ऊची आवाज में)** मेरी जरा बात तो सुनो ?

भोलाराम – **(एक छोटी सी फटी थैली में अपने कपडे ठूँसते हुए बाहर आता हुआ)** मुझे अब कुछ नहीं सुनना। मैं यहा किसी की जली-कटी सुनने के लिए नहीं हू।

नवीन – भोलाराम ।

भोलाराम – **(कुछ रूआसा होता हुआ)** मैं यहा चेतन की देखभाल के लिए रखा गया था न कि किसी के ताने सुनने के लिए। इस घर को अपना समझते हुए मैंने हमेशा हर काम को ईमानदारी के साथ पूरा किया।

नवीन – तो मैं कौनसा इन्कार कर रहा हूँ ?

भोलाराम – लेकिन आज मुझे मालुम हुआ कि मेरे लिए इस घर मे अब कोई जगह नहीं है। ख्वामख्वाह ही मैं यहा भार बना हुआ हू। भलाई अब इसी मे कि अब कोई और आसरा देखू।

नवीन – कुछ और भी कहना है ?

भोलाराम – और तो बस यही कहना है कि चेतन का ख्याल रखे।

नवीन — कह तो ऐसे रहे हो जैसे इस घर से तुम्हें कोई जबरदस्ती बाहर धकेल रहा है।

भोलाराम — धकेलने मे अब बाकी बचा ही क्या हे ? इससे भी बडी बात तो आप कह चुके हैं।

नवीन — (क्षमाप्रार्थी की तरह) भोलाराम गुस्से मे कही किसी बात को क्या इस रूप मे लिया जाता है ?

भोलाराम — बाबू साहब गुस्सा गरीब को भी आता है।

नवीन — क्यो नहीं ? चलो मैं अपना गुस्सा थूकता हू और तुम अपना गुस्सा थूक दो। बात बराबर। **(कहकर व्हील चेयर खिसकाता अन्दर चला जाता है।)**

भोलाराम — **(स्वगत)** भला यह भी कोई बात हुई। सच्ची बात मुह से निकालना भी यहा गुनाह है।

विकास — **(बाहर से आते हुए)** क्या हुआ भोलाराम ?

भोलाराम — कुछ नहीं भैया। मुझे अपने पर थोडा गुस्सा आ रहा था।

विकास — क्यो भई ?

भोलाराम — वैसे ही। मेमसाहब के न आने से सोचता हू ।

विकास — अरे तुम सोच–सोच कर क्यो परेशान हो रहे हो ? तुमसे ज्यादा तो उन्हे खुद को ही यहा आने की चिन्ता है।

भोलाराम — यह तो ठीक है ।

विकास — तो फिर यह सोचना बन्द करो।
(मेज पर दवाओं का पैकेट रखता हुआ) नवीन कहा है ?

भोलाराम — अन्दर हैं।

नवीन — **(अन्दर से ही)** आ रहा हू। **(आते हुए)** ले आये दवाए ?

विकास — हा दो हफ्ते की एक साथ ही ले आया।

नवीन — अच्छा किया। **(कहकर अचानक सिर खुजलाने लगता है)**

विकास — क्या बात है ? सिर मे खुजली आ रही है।

नवीन — हा बस अभी आने लगी हैं।

विकास — तो फिर गर्म पानी करवाकर नहा क्यो नहीं लेते ?

नवीन — नहाने को अभी मन नहीं कर रहा।

विकास — लगता है कई दिनों से नहीं नहाये।

भोलाराम — जब से यह हादसा हुआ है नहाने के लिए तैयार ही नहीं होते।

विकास — तभी इस तरह मुरझाये हुए से लग रहे हो।

भोलाराम — बीच में मेमसाहब ने कहा भी था लेकिन माने नहीं।

नवीन – और कुछ कहना है तो वो भी कह डालो।

भोलाराम – बाबूजी मैं कोई गलत तो कह नहीं रहा।

विकास – तुम्हारी आखे भी मुझे कुछ बुझी–बुझी सी दिखाई दे रही है।

नवीन – यह केवल तुम्हारा भ्रम है।

विकास – नहीं। कई दिनो से मैं नोट कर रहा हू, तुम्हारी आखो मे नींद को जैसे लकवा मार गया हैं।

नवीन – जब तक स्वस्थ नहीं हो जाता नींद तो मुझसे ऐसे ही आख मिचौनी खेलती रहेगी।

विकास – वो इसलिए कि तुम आराम नहीं करते।

नवीन – यह तुमने कैसे जाना कि मैं आराम नहीं करता ?

विकास – मुझे पता है न ? जब भी यहा आता हू, तुम इस व्हील चेयर पर इधर से उधर घूमते ही दिखाई देते हो।

नवीन – यह तो कोई सयोग रहा होगा।

विकास – मैं पूछता हू, थोडी देर लेटकर कभी कमर भी सीधी करते हो ?

नवीन – क्यो नहीं ?

विकास – मैं नहीं मानता।

नवीन – मगर लेटने से होगा क्या ?

विकास – होगा क्या !! चैन की नींद आयेगी।

नवीन – किसी बीमार आदमी को कहीं चैन मिला है ? दूसरे शब्दो मे तुम क्या यह कहना चाहते हो कि पलग पर लेटकर हर घडी ढेर सारे सपने देखता रहा हू और वो भी अनचाहे ?

विकास – नहीं। सपनो मे अपने को कैद करने की सलाह कभी नहीं दूगा। बल्कि मैं तो यह कहूगा अपने सोच को हर समय खुला रखो और मन म कोई मलिनता न आने दो।

नवीन – और ?

विकास – सपनो की दुनिया मे सिवाय भटकाव के और कुछ नहीं है। जबकि तुम्हे तो अभी बैशाखियों के सहारे सच की जमीन पर पैर रखने हैं।

नवीन – साथ मे यह भी कहो पैर रखकर चलना भी है।

विकास – परिस्थितिया सब कुछ सीखा देती है।

नवीन – मगर फिलहाल तो जरूरत है ।

विकास – .. कि बैशाखिया कौन पकडायेगा यही न ?

नवीन – हा।

भोलाराम – क्यो विकास भैया इस मामले में मेरी उपस्थिति क्या अनदेखी रहेगी ?

विकास – नहीं–नहीं यह बात नहीं है। भोलाराम तुम्हारे सहारे के बिना तो ये बाबूजी एक इच भी नहीं चल सकते।

नवीन – अरे बात तो तुम्हारी मेमसाहब की है जो मेरी तरफ से सदा बेखबर रहती है।

विकास – भाभी के लिए यह तुम्हारा बेमतलब का टेशन है। अरे कभी उनकी मजबूरियो की तरफ भी कुछ ख्याल किया करो।

नवीन – क्या ख्याल करू ? ख्याल तो उसे करना चाहिए जो अभी तक
 ।

विकास – ....नहीं आयी। लेकिन क्या यह नहीं हो सकता कि किसी कारणवश उन्हे वहा एक दिन के लिए और रूकना पड गया हो।

नवीन – यह भला कोई बात हुई ! केवल एक दिन के लिए कहकर गई थी और आज तीसरा दिन हो चला।

भोलाराम – फिर तो वे आज जरूर आ जायेगी।

विकास – सभव है आज काम पूरा न हुआ हो।

नवीन – सच तो यह है विकास उसको मेरी रत्तीभर भी चिन्ता नहीं है। चिन्ता होती तो इस हालत में वह मुझे यों छोडकर नहीं जाती।

विकास – फिर वही बात। कितनी बार कहा है दिल को उल्टे सोच की दियासलाई से बचाकर रखो।

नवीन – तुम्हारा मतलब ।

विकास – सयम से है।

नवीन – लेकिन सयम तो भीतर की मधुर ध्वनि से उपजता है।

विकास – तो क्या तुम्हारे भीतर किसी कडवाहट का करट दौड रहा है ?

नवीन – दौड तो नहीं रहा मगर अदेशा कुछ ऐसा ही है।

विकास – नवीन क्यो अपन का शिकवो का शिकार होने दे रहे हो ?

नवीन – मन आखेट का अडडा जो बन गया।

विकास – सोच को इस तरह सिकुडने मत दो।

नवीन – तो क्या करू ?

विकास – इन्तजार। अरे वे आज नहीं तो कल आ जायेगी। शिकवा–शिकायत तो बाद में भी कर लेना। अभी तो कुछ धैर्य रखो। (अचानक इसी समय बाहर से टैक्सी का हॉर्न सुनाई पडता है।)

भोलाराम – लगता है मेमसाहब आ गई। (कहता हुआ फुर्ती से बाहर जाता है)

नवीन — जाने मे कितनी फुर्ती दिखाई है जैसे सचमुच ही वो आ गई हो।
विकास — आवाज तो टैक्सी की है। उसमें और तो भला कौन आ सकता है ?
नवीन — कोई भी हो वो नहीं है।
विकास — इतना अविश्वास अच्छा नहीं है।
नवीन — तो विश्वास कहा से हो ?
विकास — क्यो ?
नवीन — विश्वास कभी जमने दिया हो तो उसने ?
भोलाराम — (हाथ में अटैची लेकर आता हुआ) लीजिए मेरी बात सही निकली। मेमसाहब आ गई।
(महिमा का प्रवेश)
विकास — नमस्ते भाभी।
ममता — नमस्ते।
विकास — आप तो कल आने वाली थी न ?
महिमा — कल एकाएक वूमैन डेवलोपमैंट की मीटिंग रख दी गई जो रात को नौ बजे जाकर खतम हुई। तब तक इटरसीटी ट्रेन निकल गई। आज सुबह होते ही पहली बस पकडी और चली आयी।
विकास — रात को वहा से बसे भी तो चलती हैं।
महिमा — रात मे बस मे सफर करने की मेरी हिम्मत नहीं होती।
विकास — हम तो अभी यह सोच रहे थे कि आप अब कल सुबह ही आयेगी।
महिमा — जब काम कम्पलीट हो गया तो वहा रूककर क्या करती ? बेकार रूकने से क्या मतलब ?
नवीन — पाडे जी भी तो साथ गये होगे ?
महिमा — नहीं वे तो एक दिन पहले ही यहा से निकल गये थे।
विकास — तो अभी वे आपके साथ नहीं आये ?
महिमा — नहीं तो। वे तो अपने कोई निजी काम से गये थे और दूसरे दिन ही लौट आये।
विकास — खैर अच्छा हुआ। आप रात के सफर से बच गई। बडी दिक्कत रहती है रात मे।
महिमा — अकेली औरत को और भी ज्यादा।
नवीन — अब बाते तो करो बन्द। पहले इस विकास को छुट्टी दो। सुबह से मेरे ही काम मे लगा हुआ है।
महिमा — लगे हुए हैं तो क्या हुआ ? ये कोई पराये नही हैं। (भोलाराम से) तुम जरा चाय बनाओ अच्छी सी। अदरक भी डाल देना।

भोलाराम – जी अभी वनाकर लाता हू।

(प्रस्थान)

महिमा – चाय पीकर चले जायेगे। वैसे इतनी जल्दी भी क्या है ? मैं यदि अभी नहीं आती तो भी तो थोडा ठहरते ही।

विकास – यह तो ठीक है भाभी मगर ।

महिमा – मगर का मतलव मैं जानती हू। घर से जितना बाहर रहोगे उतना ही हिसाव देना पडेगा ममता को यही न ! दे देना।

नवीन – कहो तो इससे फोन करवा दे ?

विकास – फिर तो शायद गहरी छानवीन से वच जाऊगा।

महिमा – (उठती हुई) क्या अव भी ममता की आखो में सन्देह की परछाइया घिरी रहती हैं ?

विकास – भाभी सन्देह का पौधा यदि एक वार अकुरित हो जाये तो फिर वो घटने का नाम नहीं लेता बल्कि दिन पर दिन बढता ही है।

महिमा – (फोन करती हुई) हैलो कौन ममता मैं महिमा बोल रही हू हा–हा अभी–अभी राजधानी से लोटी हू विकास आज सुबह से ही इनके साथ हॉस्पिटल के चक्कर काटने म लगा हुआ है हा–हा अव जाकर निपटे हैं वस चाय पीकर सीधे तुम्हारे पास पहुच रहे हैं हा–हा जरूर आऊगी— अच्छा । (कहकर फोन रख देती है)

नवीन – अब तो ठीक है।

विकास – हा।

महिमा – अभी अभी आप कुछ कह रहे थे न ?

विकास – यही कि सन्देह का पौधा यदि एक वार ।

महिमा – अकुरित हो जाये तो । मैं समझ गई। लेकिन श्रीमानजी अकुरित होने से पहले उसका बीज भी तो पडता है।

विकास – यही तो विडम्वना है। सन्देह का वीज भी तो सन्दह से ढका हुआ होता है। उसका अहसास करना सहज नहीं होता।

महिमा – खेर कुछ भी हो ममता का सन्देह सरासर वचकाना सा है। उसे इतना तो पता होना चाहिए कि जीवन की असली धुरी विश्वास है और यह विश्वास ही आपसी रिश्तो को बनाये रखता है।

विकास – किन्तु उसे यह समझाये कौन ? जीवन को यदि विश्वास के पथ पर ढालना है तो एक–दूसरे पर विश्वास तो करना ही पडेगा।

(इसी दौरान भोलाराम चाय की ट्रे लेकर आता है और सबको चाय के कप पकडाता है।)

महिमा — मुझे मिलने दो। मैं उसे समझाऊगी। कहूगी अपनों पर अविश्वास का अर्थ है *स्वय पर अविश्वास।*

नवीन — अधिक चिन्ता करने की जरूरत नहीं है। समय जब दस्तक देगा तो मोसम बदलते देर नहीं लगेगी। ओर मौसम बदला नहीं कि पत्तिया अपने आप पीली पडने लग जायेगी।

महिमा — आपने ठीक कहा। समय अपनी बात मनवा कर ही दम लेता है।

विकास — लेकिन समय का भी तो भरोसा नहीं है।

महिमा — अजी कभी न कभी तो वह चहलकदमी करता हुआ आयेगा।

नवीन — इस भ्रम में मत रहना। समय कभी चहलकदमी नहीं करता। आयेगा तो वो चुपके से। करवट लेता हुआ। तब किसी को पता ही नहीं चलेगा।

महिमा — यह तो बाद की बातें हैं।

विकास — हमे तो वर्त्तमान देखना है।

महिमा — मेरी समझ मे यह नहीं आ रहा कि ममता को आखिर भय है किस बात का ? क्या उसकी स्वय की तो कोई कमजोरी नहीं जो उसके भय का कारण बन रही हो ?

विकास — यह तो आप उसी से पूछिये। मिथ्या धारणाओ और त्रियाहठ के अकार से जब कोई आवृत्त हो जाती है तो मैं समझता हू वह अपना विवेक खो बैठती है।

महिमा — *एक बात बताओ विकास।*

विकास — पूछिये।

महिमा — आपने कभी इस बात पर गौर किया कि ममता के होठों को हरदम हरकत मे रहने की आदत कैसे हुई ? वो भी केवल आप की ही बात को लेकर।

विकास — *यही तो मेरी पीडादायक स्थिति है। उसके हठ के आगे मेरे हर* तर्क की तूलिका टूट जाती है।

महिमा — जरूर टूट जाती होगी। उसके हठ को मैं जानती हू। कुछ अजीब सा ही हैं

विकास — मेरी परेशानी का सबसे बडा कारण ही यही है।

महिमा — मैं आपकी [illegible] समझती [illegible]

विकास — पिछले हफ्ते की बात। मुझे कॉलेज से लौटने मे थोडी देर हो गई। बस, उसका रेडियो चालू।

महिमा – फिर उसके आगे तो दूसरे की आवाज तो दबनी ही है।

विकास – यही तो रोना है। उसे फिर कितना ही समझाओ कुछ सुनती ही नहीं है। कुछ अधिक जोर से कहो तो रोने बैठ जाती है–हाय मुझे तो सौतने खा गई। मेरी तो दुनिया लूट गई ।

नवीन – उस वक्त कह देते महिमा की शरण मे चली जाओ।

महिमा – मेरे पास वो आये तो सही। मैं उसके भेजे मे से सारा भूसा बाहर न निकलवा दू तो मेरा नाम महिमा नहीं।

(इस बीच भोलाराम चाय के कप उठाकर अन्दर ले जाता है)

विकास – भाभी उसको समझाना दीवार से सिर खपाना है।

महिमा – इन्हे थोडा स्वस्थ हो लेने दो। फिर किसी दिन मे उसके पास जाऊगी। तब देखूगी उसके दिमाग की सूई कहा अटकी हुई है।

विकास – मैं उस दिन की प्रतीक्षा करुगा। **(उठता हुआ)** अब चलता हू।

नवीन – फिर कब आओगे ?

विकास – कब क्या ? एक चक्कर तो रोज इधर का लगा ही लेता हू।

महिमा – यही तो आपका बडप्पन है।

नवीन – इसमे भला बडप्पन किस बात का ? यह कहो हमारे साथ इसका असीम अपनत्व हैं

महिमा – यही समझ लो।

(विकास का प्रस्थान)

नवीन – ममता इन दिनो कुछ ज्यादा ही शक्की हो गई है। अधिक चतुराई भी कभी–कभी समझ के दायरे को सकुचित बना देती हैं।

महिमा – सबसे बडी दुविधा तो कानो के कच्चे होने से उत्पन्न होती है।

नवीन – यह तो मैं भी मानता हू, घर पर सारे दिन निठल्ले बैठ हुए को दूसरा से सुनी बातों मे बहुत रस आता है।

महिमा – और निठल्ला हर समय उल्टा–सीधा ही सोचता है। जैसे आप ।

नवीन – .. हा–हा मेरे लिए तो तुम यही कहोगी। लेकिन ममता तो काफी एज्यूकेटेड है।

महिमा – एज्यूकेटेड क्या वैल एज्यूकेटेड। एम ए मे यूनिवरसीटी को टॉप कर चुकी है।

नवीन – यह मुझे नहीं पता।

महिमा – पी एच डी भी कर रही थी कि अचानक विचार ढा दिया।

नवीन – क्यो ? ऐसी गलती क्यो की ?

महिमा – यह तो अब वही जाने।

नवीन – पूछा नहीं कभी ?

महिमा – पूछा था। बोली–इस बारे में कुछ कहना मैं मुनासिब नहीं समझती।

नवीन – पागल है। विकास को उस पर दबाव डालना चाहिए था। पी एच डी कर लेती तो आज वह भी कहीं लेक्चरार होती।

महिमा – वो कोई बच्ची तो है नहीं जो विकास उसे समझाये। यह तो उसे खुद ही सोचना चाहिए था।

नवीन – विकास मे बोल्डनैस नहीं है।

महिमा – इसके बारे मे तो अब क्या कहा जा सकता है। हो सकता है विकास की भी अपनी कोई कमजोरी हो।

नवीन – फिर तो बात ही खत्म। मर्द अपनी कमजोरियो से अधिक कभी कमजोर नहीं होता।

महिमा – यह तो आपसे अधिक और कौन जान सकता है।

नवीन – क्या SS.....?

महिमा – .. लेकिन यह सत्य है सन्देह की दीवारें अपने आप रिसती हैं और एक दिन अपने आप ही ढेर हो जाती है।

नवीन – सच तो यह है कि ममता का सोच बहुत सिकुडा हुआ है।

महिमा – तभी तो एक ही बात को पकडकर बैठ जाती है जिसमे सिवाय बडबड़ाने के और कुछ हासिल नहीं होता।

नवीन – इस हालत में विकास का उसके साथ निभना बहुत कठिन है।

महिमा – अजी यह तो विकास ही है जो इतना सुनने के बावजूद भी अनबोले वाक्यों की बागडोर अपने हाथों में पूरी तरह सभाले रखते हैं।

नवीन – उसकी जगह कोई और होता तो ?

महिमा – घर मे महाभारत का मानसून हर समय मडराता रहता।

नवीन – यदि दूसरे कोण से सोचे तब ?

महिमा – वो कैसे ?

नवीन – बतगड तब बनता है जब कोई न कोई बात होती है। तिल नहीं हो तो ताड बनाने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

महिमा – विकास आपका साथी है। पूछ लीजिए उनसे कि उनके यहा कौन सी बात तिल का आधार बनी ?

नवीन – वह क्या बतायेगा ? वह तो तुम्हारी तरह अपने को हमेशा दूध का धुला हुआ ही समझता है।

महिमा – वाह मुझे भी बीच मे लपट लिया।

नवीन – तुम तो हमेशा अपने को क्लीन समझा करती हो। अपनी कोई गलती स्वीकार करना तो तुम्हारे शब्दकोष में ही नहीं है।

महिमा – बस रहने दीजिए।

नवीन – क्यो मेरी बात से कोई काटा चुभ गया ?

महिमा – **(कोई प्रत्युत्तर नहीं देती)**

नवीन – यह लो फिर तो मैं चुप्पी साध लेता हू।

महिमा – चुप्पी साध लेन से बात की गहराई कम नहीं होती।

नवीन – फिर ?

महिमा – **(बात को दूसरी ओर मोडती हुई)** आप तो यह बताइये पैर का यह पटटा कितने दिनो के लिए बधा है ?

नवीन – क्यो ? फिर कहीं दौरे पर जाना है ?

महिमा – दोरे पर जाने की बात नहीं है। पूछ तो इसलिए रही हू कि कम से कम यह सब मेरी नोलेज मे तो रहे।

नवीन – अभी तो चालीस दिनों का बधा है। बीच म दस दिन बाद एक दफे डाक्टर को और दिखलाना है। उसके बाद सही हालत का पता लगेगा।

महिमा – वैसे भी हडिडया जुडने मे समय तो लगता ही है।
(इसी समय अन्दर से भोलाराम चेतन को हाथ पकडे हुए अपने साथ लाता है)

नवीन – **(चेतन से)** पीछे लॉन मे क्या कर रहा था ?

भोलाराम – बताओ चेतन।

चेतन – चिडियो का चहकना देख रहा था ।

नवीन – अच्छा !

महिमा – इधर आओ देखो मैं तुम्हारे लिए क्या लायी हू ?
(कहकर अटैची में से एक रैडिमेड सूट निकालकर देती है)

चेतन – यह मेरे लिए है ?

भोलाराम – हा यह तुम्हारे लिए ही लेकर आयी हैं।

चेतन – म तो अभी पहनूगा ।

महिमा – क्यो नहीं ? भोलाराम इसे अन्दर ले जाकर यह नया सूट पहना दो।

भोलाराम – अच्छा जी।
(दोनों का अन्दर की ओर प्रस्थान)

महिमा – **(ऊची आवाज में)** अरे दूध पिला दिया इसे ?

भोलाराम – (अन्दर से ही) जी मेमसाहब।

महिमा – अच्छा किया।

नवीन – अब अपनी कहो। तुम्हारे प्रमोशन का क्या हुआ ?

महिमा – मुझे जब प्रमोशन लेना ही नहीं तो पूछने से मतलब ही क्या है ?

नवीन – क्यो लेना क्यो नहीं ?

महिमा – लेते ही बाहर जो जाना पडेगा।

नवीन – तो क्या हुआ ? बाहर जाने मे कोई हर्ज है।

महिमा – यह बात जरा अपने सीने पर हाथ रखकर फिर कहिये।

नवीन – तुम समझती हो क्या मैं तुम्हारे प्रमोशन की बात सुनकर खुश नहीं होऊगा ?

महिमा – यह बात मुझसे नहीं अपने आपसे पूछिये।

नवीन – इतनी गहराई मे मत उतरो कि डूबी हुई विवादो की किश्ती में फिर से पैर उलझ जाये।

महिमा – यह तो अपना–अपना सोच हैं। मैं समझती हू, हमारे बीच विवादो का कभी कोई घेरा रहा ही नहीं।

नवीन – लेकिन यह तो सच है कि तुमने मेरे भीतर के भावों की कभी कद्र नहीं की।

महिमा – यह आपका सरासर मिथ्यारोपण है। आपने कभी अपने भावों को होठो पर लाकर शब्द दिये हो और मैंने उनको सुने–अनसुने किये हो तो बताइये।

नवीन – । (कोई जवाब नहीं)

महिमा – यदि कोई भीतर की भावनाओ को भीतर ही चबा डाले तो उसके लिए मैं दोषी नहीं हू।

नवीन – तुमसे बहस करना बेकार है।

महिमा – आप भी तो बेमतलब बात को बीच मे से काट देने के आदी हो गये। क्या मेरे कहे पर आपने भी कभी गौर किया ?

नवीन – न किया तो तुम्हे इससे फर्क भी क्या पडा ? मैंने नहीं तो किसी और ने तो गौर किया ही होगा ?

महिमा – क्या SSS ???

नवीन – मेरा मतलब है ।

महिमा – आपका मतलब मैं सब समझती हू। आप यदि यह सोचते हैं कि मेरी निष्ठा कहीं बटी हुई है तो यह बात अपने मन से तुरन्त निकाल दीजिए।

नवीन – तो तुम भी सच्चाई से आख मिचौनी खेलना छोड़ दो।

महिमा – उल्टा चोर हमेशा कोतवाल को ही डाटता है। खेल तो आप खेल रहे हैं और भूमिका करते हैं अनजान बनने की। मगर यह मत भूलिये सच्चे को कोई डिगा नहीं सकता।

नवीन – कह तो ऐसे रही हो जैसे सच्चाई का ठेका केवल तुम्हीं ने ले रखा है।

महिमा – अपनी कडवाहट को यदि आप मेरे हिस्से में जबरदस्ती डालना चाहें तो मुझे मजूर है। लेकिन फिर भी मैं हाथ जोडकर यही कहूगी कि शक का कोई कीडा यदि दिमाग में किलबिलाता हो तो उसे फौरन बाहर निकालकर कुचल डालिये।

नवीन – वरना ?

महिमा – .. वह अन्दर ही अन्दर आप ही को कुतरने लगेगा।

नवीन – बस यहीं आकर तुम मात खा गई।

ममता – कैसे ?

नवीन – शक की बात वही करता है जो असली गुनहगार होता है।

महिमा – क्यो मन को किसी भूल–भुलैया में डालकर व्यर्थ में बेचैनी मोल लेने पर तुले हुए हो ? इसमें कुछ नहीं रखा। थोडी शान्ति रखिये। बेमौसम की फुहारो से तन और मन दोनो को हानि होती है।

नवीन – यह सीख तुम मुझे देने की कोशिश मत करो। मैं कोई नादान बच्चा नहीं हू। मुझसे तो सीधे मुह ही बात किया करो।

महिमा – वाह ! ऐसा मैंने क्या कह दिया जो इतना उबल रहे हो ?

नवीन – मैं बहस करने का आदी नहीं हू, यह तुम जानती हो।

महिमा – जानती हू। और अब यह भी जानने लग गई कि आपको कुछ अरसे से छोटी–छोटी बातो पर चटकने का चस्का भी लग गया।

नवीन – क्या ऽ ?

महिमा – आगे बस अपनी बीन स्वय बजाते रहिये। (कहकर अन्दर की ओर चली जाती है)

नवीन – (स्वगत) इसमें बीन बजाने की क्या बात है ? तुम बात ही ऐसी करती हो कि न चाहते हुए भी खामोशी तोडनी पडती है। आखिर मेरा भी कुछ स्वाभिमान है। तुम्हारी हर बात को कैसे स्वीकार करता रहू ? दस साल होने को आये तुम्हारी अनचाही बातों को सुनते–सुनते। अब मेरा साहस साथ नहीं दे रहा। वैसे भी धैर्य की कोई सीमा होती है।

मानता हू, तुम्हारी तुलना मे मैं उन्नीस से अधिक नहीं हू। कुछ बौना भी लगता हू तुम्हारे आगे। लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि तुम चाहे जहा अठखेलिया करती रहो और मैं गम के गलियारे मे बैठा बुदबुदाता रहू।

तुम समझती हो मुझे कुछ पता नहीं। मुझे सब पता हैं मैं मौन हू तो इसलिए कि कहीं हमारा बसा–बसाया घर बिखर न जाये। लेकिन लगता है इस घर मे शान्ति की ये शालीन दीवारे अब कुछ–कुछ तडकने को हो रही हैं। इनका ऊपरी पलस्तर तो कहीं–कहीं से उखडने भी लग गया।

इसके अलावा **(थोडा विराम)** अन्दर का एक डर मेरा भी है कहीं मेरी यह अपगता मेरे पुरुषत्व को ही चुनौती न देने लगे। **(विराम)** तब मैं अपनी डोलती जीवन नैया को दूसरे शब्दों में अपनी डगमगाती मर्यादा को शायद ही फिर फिसलने से रोक सकू ?

(इसी समय फोन की घटी बजती है तो फोन उठाकर) हैलो ....कौन.... महेश .. हा–हा आ गई .. मेरे अस्तित्व के अस्थिपजर को कुरेदने के लिए ?

(फोन रख देता है और विचारों में विचरण करने लगता है)

दो

(सुबह का समय। विकास के घर की अगली बैठक। विकास अन्दर बरामदे मे खडा गले की टाई ठीक कर रहा है कि बाहर से महेश का प्रवेश।)

महेश – अरे भई कोई घर मे है ?

विकास – (अन्दर से ही) क्यो तुमने क्या इस घर को सूना समझ रखा है ?

महेश – लगता तो कुछ ऐसा ही है। (सोफे पर बैठते हुए) तभी तो दरवाजा खुला पडा है।

विकास – (अन्दर से आते हुए) चोरो के लिए दरवाजा खुला हो या बन्द कोई फर्क नहीं पडता।

महेश – तो गोया मेरी गिनती चोर–उचक्को में होने लगी है।

विकास – और नहीं तो। बाहर काल बैल लगी हुई है। शरीफ लाग उसे बजाये बिना कभी अन्दर नहीं आते।

महेश – लेकिन मैं उस श्रेणी मे नहीं हू।

विकास – तो बेशर्म कब से बन गये ?

महेश – जब स तुम्हारा साथ हुआ है।

विकास – तो फिर मेरी तरह ज्यादा बकवास मत करो। (विराम) अब बोलो सुबह–सुबह सिर खपाने क्यो चले आये ?

महेश – इसलिए कि मेरे पीरियड दोपहर का लगते है और आप श्रीमानजी उस समय स्टाफ रुम के किसी कोने मे एक सफेद परी को बहलाने–फुसलाने मे लगे होते हैं ।

विकास – क्या बक रहे हो ?

महेश – बक नहीं रहा सच कह रहा हू। कॉलेज मे वो एक नई मैडम क्या आ गई मेरा तो उसने यार ही छीन लिया।

विकास – तुम कहना क्या चाहते हो ?

महेश – यही कि कानो मे तेल डालना छाड दो और दूसरों को अपने से अधिक बेवकूफ मत समझो। सच–सच बताओ उस अरूणा मेडम के साथ चक्कर क्या चल रहा है ?

विकास – **(महेश के मुह पर हाथ रखते हुए)** तुमसे धीरे नहीं बोला जाता ?

महेश – **(हाथ परे करते हुए)** क्यो भाभी सुन लेगी इसलिए ?

विकास – हा। उसने यदि सुन लिया तो आसमान को सिर पर उठाते देर नहीं लगायेगी।

महेश – स्योरी यार। चलो मैं अपना वोल्यूम थोडा कम कर लेता हू। अब तो बताओ क्या लफडा है ?

विकास – उस नई मैडम के साथ ?

महेश – अरे तुम्हारे लिए वह नई कहा से आ गई ? तुम्हारी तो वह पहले से ही परिचित है। जानी–पहचानी और परखी हुई। नई–नवली तो वह हम लोगो के लिए है।

विकास – तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया जो उस बेचारी को नवेली कह रहे हो।

महेश – क्यो न कहू ? होठो पर लाली नहीं लगाती तो क्या वह नवेली नहीं है ?

ममता – **(अन्दर से आती हुई)** किस नवेली की बात हो रही है ? जरा मैं भी तो सुनू।

महेश – अब बताओ न भाभी को।

विकास – हमारी कॉलेज मे कोई अरूणा मैडम आयी है।

ममता – वह फिर कहा से आ टपक पडी ?

महेश – आप नहीं जानती भाभी। कुछ ही दिन हुए हैं अलवर से प्रमोशन पर आयी है। पहले वहा लेक्चरार थी और अब यहा आकर प्रोफेसर बन गई। इसलिए अब आपको जरा अलर्ट रहना है।

विकास – अरे उल्लू के पटठे यह नारद मुनि का मुखौटा कब से लगाने लग गया ?

ममता – क्यो क्या यह झूठ बोल रहे हैं ?

महेश – देख लिया भाभी सच्ची बात कहने पर मैं इसे नारद मुनि लगता हूं। क्यों भई ? शाम को तुम्हारे स्कूटर के पीछे कौन बैठा करती है ? भाभी या वो नयी मैडम अरूणा ?

विकास – अरूणा। (विराम) उसके लिये किराये का कोई मकान ढूढ रहे हैं।

महेश – और वो इतने दिनो मे भी कहीं ढूढ नहीं पाये ?

विकास – किराये का मकान मिलना कोई आसान काम है क्या ?

महेश – तो फिर ढूढते रहो।

ममता – अकेली महिला को तो कोई देता भी नहीं है।

विकास – यह इसे क्या पता ?

ममता – तो फिर इस काम के लिए उसे किसी और प्रोफेसर से भी तो सहायता लेनी चाहिए ?

विकास – यही तो दिक्कत है। मेरे अलावा वह किसी और को जानती भी तो नहीं है। मैं तो उसके साथ अलवर में रह चुका हूं।

महेश – अच्छा तो इसीलिए तुम अकेले को ही मदद के लिए आगे आना पडा।

विकास – वो तो ठीक है लेकिन तुमने तो अपनी ओर से ताश के नकली पत्ते फेंकने मे कसर नहीं रखी।

महेश – देख भई भाभी के आगे मैं कोई भी बात छिपाता नहीं। सच के सिवाय और कुछ भी नहीं कहता।

ममता – अच्छा किया जो आपने मुझे बता दिया।

महेश – फिर तुमने अपनी कही मैंने अपनी। इसमे बुरा मानने जैसी तो कोई बात ही नहीं है।

विकास – शरीफजादे तो इस दुनिया मे अब एक तुम्हीं बचे हो।

महेश – इसमे क्या शक है ? फिर भी मैंने सच बोलने मे थोडी कजूसी बरती यह मेरी उदारता समझो।

विकास – अच्छा !

महेश – हा। मैंने भाभी को यह नहीं बताया कि तुम मैडम को हर रोज होस्टल से लेने और छाडने भी जाते हो।

विकास – और कुछ !

महेश – शेष फिर कभी।

विकास – देख महेश तुम्हारी भलाई अब इसी मे है कि चुपचाप यहा से खिसक लो।

महेश – गुस्सा क्यो होते हो यार ? भाभी को यदि सावधान रहने की सलाह देता हू तो तुम चिढते क्यों हो ?

ममता – ये तो ऐसे ही चिढते रहेगे। तुम इनका बुरा मत मानना।

विकास – सुन ली इसकी बात ?

महेश – हा।

विकास – तो अब फूटो यहा से। मुझे कॉलेज जाना है।

ममता – पहले मैडम को लेने होस्टल भी तो जाना होगा ?

महेश – यह मैं नहीं भाभी कह रही है।

विकास – मैं सब समझ रहा हू।

महेश – तब फिर मैं चलता हू। टा टा ।

(प्रस्थान)

ममता – तो आपके लेट आने का कारण अब समझ मे आया।

विकास – आ गई न महेश की बातों मे।

ममता – उनकी बातों से मुझे क्या लेना। आपने खुद ही तो अभी कहा है अरूणा के लिए मकान ढूढने को आये दिन शाम को उसका साथ देना पडता है।

विकास – पडता है तो क्या हुआ ? इसमे कोई बुराई है ?

ममता – यह मैं कब कहती हू ?

विकास – तो बेमतलब बात को उछालने से क्या मतलब ? कोई यदि मुझसे सहयोग की अपेक्षा रखे तो मैं उसे निराश क्यो करू ?

ममता – करना भी नहीं चाहिए यदि सहयोग दे सकते हो तो।

विकास – फिर विश्वास की बात है। अरूणा को मेरे पर विश्वास है इसीलिए उसने मुझसे इस काम मे सहयोग करने को कहा।

ममता – और आपने सहमति दे दी। यह सोचकर कि अकेली है शहर मे कहा घूमती फिरेगी।

विकास – यही बात है।

ममता – और अब हर रोज उसको साथ लिये हुए यहा–वहा चक्कर लगाना पड रहा है।

विकास – जब तक ढग का मकान न मिले। यह तकलीफ तो उठानी ही पडेगी।

ममता – ज्यादा तकलीफ तो तब होती यदि अकेले होते। मैडम पीछे बैठी हो फिर ऐसी तकलीफों की क्या परवाह ?

विकास – तुम्हारा मतलब है मैडम साथ होने से तकलीफें आनन्द की अनुभूतियों में बदल जाती हैं ?

ममता – वो तो बदलनी ही है।

विकास – यह तुम नहीं बोल रही तुम्हारे मन में छिपा चोर बोल रहा है।

ममता – वो तो बोलेगा। जरूर बोलेगा। इसलिए कि आपने मुझे भुलावे मे रखा।

विकास – क्या भुलावे म रखा ?

ममता – तो आपने मुझे सही कब बताया ?

विकास – तो झूठ क्या कहा ?

ममता – क्यो मेरा मुह खुलवाते हो ?

विकास – इसलिए कि मन का गुब्बार बाहर निकल आये।

ममता – तो बताइये आपने मुझसे यह झूठ क्यो बोला कि शाम को आने मे इसलिए लेट हो जाती है कि एक प्राइवेट कॉलेज मे एक्स्ट्रा क्लास लेने जाता हू।

विकास – वो इसलिए कि तुम्हें यदि सच बताता तो तुम उसे पचा नही पाती। जैसे अभी नहीं पचा रही। अन्यथा मुझे झूठ बोलने का कोइ रोग नहीं है। डर भी नहीं कि किसी गलत काम मे लगा हू।

ममता – सफाई मे अब चाहे कुछ भी कहो ।

विकास – मगर तुम्हे विश्वास नहीं होता।

ममता – इसलिए कि मुझे झूठ से नफरत है।

विकास – और मुझे औरत की ईर्ष्या से।

ममता – इस खोखली दलील मे कुछ नहीं रखा।

विकास – फिर तुम भी बेबुनियादी बातो को लेकर तनाव के ताने बुनना छोड दो। अच्छा यह बताओ मैडम अरूणा के बारे मे तुम कुछ जानती भी हो ?

ममता – मुझे जानकर करना भी क्या है ?

विकास – तो अच्छी तरह जान–पहचाने बिना किसी के बारे में गलत राय बना लेना तुम जैसी पढी–लिखी के लिए कोई शोभा की बात नहीं है।

ममता – ऐसी उसमे क्या खास बात है जो औरो मे नहीं है ?

विकास – खास बात तो कुछ भी नहीं हा एक दुर्भाग्य उसके साथ जरूर जुडा हुआ है ! और वो यह कि वह एक विधवा है। परिस्थितियों की थपेडी हुई एक असहाय अबला।

ममता – क्या ऽऽ ??

विकास – हैरानी की बात नहीं है। विधाता ने उसके पति को शादी के दूसरे दिन ही अपने पास बुला लिया।

ममता — ओह !
विकास — आज इस ससार मे उस अभागिन का कोई अपना नहीं है।
ममता — सिवाय आपके ?
विकास — ममता ?
ममता — .. । (कोई उतर न देकर मुह दूसरी तरफ मोड लेती है)
विकास — भविष्य मे ऐसी कोई अप्रिय बात मुह से मत निकालना कहे देता हू। तुम जानती हो मुझे किसी तरह की बेहुदगी पसन्द नहीं है। (कहते हुए अन्दर चला जाता है)
ममता — (स्वगत) सच्ची बात सबको कडवी लगती है। इसलिए सच सुनने को कोई तैयार नहीं होता। हा प्रतिरोध करने के लिए तुरन्त उतारू हो जाते हैं। यह नहीं सोचते कि सामने वाले ने कुछ कहा है तो फिर थोडा अपना हृदय भी टटोले।
(इसी समय बाहर से दरवाजे पर कोई दस्तक देता है)
ममता — कौन ? अन्दर आ जाइये।
सजय — (प्रवेश करते हुए) नमस्ते जी।
ममता — नमस्ते।
सजय — जी मेरा नाम सजय है। मैं मीना का बडा भाई हू।
ममता — कौन मीना ?
सजय — जी हिन्दी मे जो एम ए फाइनल कर रही है।
ममता — तो मैं क्या करू ? कर रही होगी।
सजय — जी मैं तो प्रोफेसर साहब से मिलने आया हू।
ममता — क्यो उनसे क्या काम है ?
सजय — जी ट्यूशन के सिलसिले मे मिलना है।
ममता — वाह ! पढती बहन है और मिलने आया है भाई।
सजय — यह बात नहीं है जी।
ममता — तो फिर क्या बात है ?
सजय — जी उनसे यह पूछना है यदि वे तैयार हो तो मैं अपनी बहिन को यहा ट्यूशन के लिए भेज दू।
ममता — यह बताओ तुम्हे तो ट्यूशन नहीं करनी न ?
सजय — जी मैं तो अपनी बहिन के लिए आया हू।
ममता — फिर तो आने का कोई मतलब ही नहीं।
सजय — क्यो जी ?
ममता — लडकियो की ट्यूशन करना उन्होने छोड दिया।

सजय — अच्छा जी। इसका पता होता तो मैं आता ही नहीं।
ममता — कोई बात नहीं। अब तो ध्यान आ गया ?
सजय — जी। (प्रस्थान)
ममता — (स्वगत) पता नहीं जब देखो तब लडकिया ही ट्यूशन पढने आती हैं। लडकों को तो जैसे ट्यूशन की जरूरत ही नहीं पडती। यह तो अच्छा हुआ इससे मेरा सामना हो गया और मैंने वापस रास्ता दिखलाने में देर नहीं लगाइ। ये होते तो पढाने की इट हा कर देते।
विकास — (अन्दर से आते हुए) क्यो अभी कोई आया था ?
ममता — आया था। खाली हाथ लौटा दिया।
विकास — क्यो ? कौन था ?
ममता — कोई पागल था। पूछ रहा था 'मेरी कोई सिस्टर तो यहा नहीं आई ?
विकास — ऐसा फिर कौन था ?
ममता — होगा कोई। दुनिया मे पागलो की कमी है क्या ?
विकास — नहीं। ढूढो तो हजार मिलेग।
ममता — अच्छा यह बताओ मैडम अरूणा अभी रहती कहा है ?
विकास — लेडीज हास्टल मे।
ममता — फिर उन्हे अलग से मकान लेने की क्या जरूरत है ?
विकास — होस्टल मे कोई लम्बे समय तक नहीं रह सकती। चार–छ महीने की बात और है। अन्तत कोई न कोई दूसरी जगह तलाश करनी ही पडती है।
ममता — दूसरी जगह जायेगी तो फिर वहा अकेली न पड जायेगी ?
विकास — अकेलापन तो उसके जीवन के साथ शुरू से जुडा हुआ है। बचपन में ही मा–बाप चल बसे। कुछ समय मौसी के यहा रही कि परमात्मा ने उसका सहारा भी छीन लिया। बस तभी से अकेलेपन से निरन्तर जूझ रही है।
ममता — यह सब पूर्व जन्म के सस्कार हैं।
विकास — जो भी हो उसके लिए जीवन एक मुसीबत बन गया है।
ममता — औरत का अकेली रहना किसी भी रूप मे सुरक्षित नहीं है।
विकास — लेकिन करे क्या ? मजबूरी है।
ममता — किसी के साथ पुनर्विवाह क्यो नहीं कर लेती ?
विकास — इस उम्र में कौन हाथ थामेगा उसका ?

ममता — हाथ थामने वालो की भला कमी है क्या ? आज के अर्थयुग मे उस जैसी कमाऊ औरत और कहा मिलेगी किसी को ?

विकास — तुम्हारे ध्यान मे कोई उसके योग्य सुपात्र नजर आता हो तो वताओ न ?

ममता — महेश भैया से पूछकर देखो।

विकास — तुम्हारा दिमाग तो ठिकाने है ?

ममता — क्यो ?

विकास — महेश के लिए जब एक से एक बढकर वैसे ही कुआरी कन्याओं के प्रस्ताव आ रहे हैं तो वह इधर क्यो उलझेगा ?

ममता — ऐसी बात है तो वह शादी कर क्यों नहीं लेते ?

विकास — यह तो वह जाने। हो सकता है अभी उसे कोई मनचाही लडकी नजर नहीं आ रही हो।

ममता — फिर तो अरूणा को अखबारों में विज्ञापन देकर ट्राई करनी चाहिए। उससे मेरी समझ में समस्या हल हो सकती है।

विकास — तुम्हारे में ऐसी समझ कब से आ गई ?

ममता — भावी आशकाओ पर चिन्तन करने से।

विकास — ओह अब समझा।

ममता — अजी विज्ञापन देखते ही विशेषकर विधुरजनो की ओर से कई प्रस्ताव आयेंगे।

विकास — क्यों नहीं ? फिर भी उपयुक्त वर मिलना उतना ही कठिन है जितना पहाडी सफर मे मनवाछित साथी मिलना।

ममता — तब तो प्रतीक्षा सूची मे अपना नाम दर्ज करवाकर चुपचाप घर में बैठे रहने के सिवाय और कोई चारा नहीं है।

विकास — इसके लिए उसे किसी की सलाह की जरूरत नहीं है।

ममता — अच्छी वात है। वैसे भी तीस पार करने के बाद जब कोई 'महिला' *बन जाती है तब उसे किसी 'पुरुष के साथ विवाह नहीं समझौता* करना पडता है।

विकास — इसलिए कि विवाह केवल लडके–लडकी ही करते हैं ?

ममता — बिल्कुल यही बात है। उसके बाद तो एक अधूरे को दूसरे अधूरे के साथ मिलकर 'पूर्ण बनने का अहसास कर लेना ही श्रेयस्कर है।

विकास — यह बात तुमने बहुत अच्छी कही। लेकिन मेरी यह समझ में नहीं आ रहा कि मैडम अरूणा के विवाह की चिन्ता तुम्हे कैसे होने लगी ?

ममता — यह सोचकर कि भूखा किसी दूसरे की रोटी छीनने की धृष्टता न करे।

विकास — इसके अलावा कुछ और भी कहना है ?

ममता — नहीं। मगर आप इस तरह घूर कर क्यो देख रहे हैं ? मैंने क्या कुछ गलत कह दिया ? आखिर आपकी वह लगती क्या है ?

विकास — कुछ भी लगती हो मैं उसके बारे में किसी प्रकार की कोई अनर्गल बात नहीं सुन सकता।

ममता — तो मैं भी यह बर्दाश्त नहीं कर सकती कि आग के अगारों से आप अपने हाथ सेके। कल को हाथ झुलस गये तो ?

विकास — तुम जिस पक्षी पर तीर मार रही हो और वो यदि फडफडाता नीचे आ गिरा तो ?

ममता — तो कोई कहर नहीं ढा जायेगा ? पक्षियों का शिकार तो सदा से होता रहा है।

विकास — लेकिन इन्सान के साथ ऐसी कोई घात सहन नहीं की जा सकती।
(बाहर से किसी के आने की आहट सुनाई पडती है)

ममता — लगता है फिर कोई आया है।
(भोलाराम का प्रवेश)

भोलाराम — जय रामजी की विकास भैया।

विकास — जय रामजी की। क्या बात है भोलाराम आज रास्ता कैसे भूल गये ?

भोलाराम — रास्ता कहीं नहीं भूला। सीधा यहीं आया हू।

विकास — अच्छा ! तो कहो कैसे आना हुआ ?

भोलाराम — बाबूजी न कहलवाया है कल शाम को कॉलेज से आते समय उनसे मिलते जाये।

ममता — भाई साहब को कहना इन दिनो ये शाम को किसी और काम मे उलझे हुए हैं। इसलिए समय मिलने पर ही आ पायेगें।

विकास — नहीं–नहीं ऐसी कोई बात नहीं है। कल मैं उनसे जरूर मिल लूगा।

भोलाराम — अच्छा जी।

ममता — महिमा दीदी कैसी है ?

भोलाराम — ठीक है।

विकास — वैसे भाईसाहब की तबियत तो सही है ?

भोलाराम — सही तो क्या है ?

विकास – .. क्या मतलब ?

भोलाराम – अब आपसे क्या छिपाये भैया ? बाबूजी और मेमसाहब मे वो पहले जैसी बात नहीं रही। अब तो दोनो हर समय एक–दूसरे की ओर पीठ किये हुए ही रहते हैं।

ममता – अचानक ऐसा क्या हो गया उनमे ?

भोलाराम – यह तो अब वे ही जाने।

विकास – तुम तो भोलाराम बरसो से उनके साथ हो। उन दोनो में आखिर तकरार किस बात को लेकर पैदा हुई ?

भोलाराम – अब क्या बताये ? कचहरी मे जो पाडेजी हैं ?

ममता – ...पाडेजी कौन ?

विकास – उनके यानि भाभीजी के इमिजियेट बॉस–सहायक जिलाधीश।

भोलाराम – हा–हा वे ही। साल भर पहले की बात है। एक रोज कचहरी मे अफसरों की कोई मीटिग थी। मीटिग खत्म हुई तब तक रात को दस बज चुके थे। उस समय पाडेजी अपनी कार मे मेमसाहब को घर छोडने क्या आ गये बाबूजी के दिल में तूफान उठ खडा हुआ।

विकास – ओह तो असली कथा यहा से शुरू हुई।

भोलाराम – बस उसी दिन बाबूजी को सन्देह का साप सूघ गया।

ममता – यह बहम तो फिर भाईसाहब का खुद का पाला हुआ है।

विकास – तभी तो अपना शिकार खुद ही बने हुए हैं।

भोलाराम – एक बडी कमी बाबूजी में यह आ गई कि मेमसाहब के आगे अपने को वे हरदम हल्का महसूस करते हैं। फिर अन्दर ही अन्दर कुढते रहते हैं। जबकि मेमसाहब मे कभी कोई ऐसी बात नहीं देखी।

विकास – एक्सीडेंट के बाद तो वे कुछ ज्यादा ही डिप्रैस हो गये।

भोलाराम – बिल्कुल सही कहा आपने। अब तो बात–बात पर वे मेमसाहब पर खीजते रहते हैं।

ममता – वैसे दीदी भी तो बहुत तेज स्वभाव की है। भाईसाहब के छिलके उतारने मे वे भी कोई कसर नहीं छोडती।

भोलाराम – ना–ना मेमसाहब के लिए ऐसी बात मत कहिये। वे तो सचमुच एक देवी हैं। बाबूजी का जितना ख्याल वे रखती हैं उतना कोई नहीं रख सकता। नौकरी के अलावा और वे कहीं भी नहीं जाती।

विकास – नौकरी पर तो जाना ही पडता है।

भोलाराम – मगर ध्यान उनका हरदम बाबूजी की तरफ ही लगा रहता है।

ममता — कडवा सच तो यह है कि भाईसाहब को उनकी नौकरी ही पसन्द नहीं है।

विकास — यही तो उनका माइनस पाइट है।

भोलाराम — बुरा न मानना आठ जमात तो मैं भी पढा हुआ हू....।

विकास — अच्छा ! यह तो मुझे पहली बार मालूम हुआ।

भोलाराम — भैयाजी पढी–लिखी औरत नौकरी न करे तो क्या घर में बैठकर अपने ज्ञान को दीमक लगाने दे ? यह तो कोई अच्छी बात नहीं है। जब पढाई की है तो उसका सदुपयोग क्यों न हो ?

ममता — मैं नहीं मानती कि घर में बैठने से ज्ञान को दीमक लग जाती है...।

भोलाराम — यदि उसका सदुपयोग न किया जाय तो ?

ममता — नहीं अरे ज्ञान तो गगा है जहा भी है बहेगी।

विकास — लेकिन बहाव की कोई दिशा तो हो।

भोलाराम — भैया मैंने इतने वर्षों में प्राय यही देखा कि घर में बैठी पढी–लिखा औरते एक–दूसरे की काट करने के सिवाय कुछ नहीं करती।

विकास — हा–हा यही बात है।

ममता — यह तो अपनी–अपनी समझ है और कुछ नहीं। खैर तुम तो भाईसाहब को जैसा इन्होने कहा बता देना। अब तुम जाओ।

भोलाराम — अच्छा जी। नमस्ते।

ममता — नमस्ते।

(भोलाराम का प्रस्थान)

विकास — तुम भी अजीब हो। उसे पानी के लिए ही नहीं पूछा और चलता कर दिया।

ममता — तो क्या हुआ ? नौकर को भी क्या पूछना पडता है पानी के लिए ?

विकास — क्या नौकर जो पराये घर का हो क्या मेहमानों की गिनती में नहीं आता ?

ममता — रहने दीजिए। हर जगह आपका आदर्शवाद काम नहीं आता। कल को तो आप यह भी कहेगे कि यहा आने वाली आपकी शिष्याओ को मैं चाय भी पिलाया करू ?

विकास — तो क्या उनको चाय पिलाने में तुम्हारा मान घटता है ?

ममता — नहीं घटता। लेकिन उन दो टके की छोरियो को चाय पिलाकर मुझ अपना मान बढवाना भी नहीं है।

विकास — ममता कितनी बार कहा कि किसी के लिए ऐसे ओछे शब्द बोलकर अपनी गरिमा को नीचे मत गिराओ। मैं पूछता हू यहा आने वाली

छोरिया दो टके की कैसे हो गई ? उन्हें क्या सडको पर नाचने–गाने वाली समझ लिया ?

ममता – यहा आकर वो करती ही क्या हैं ? जब तक आप उन्हे अटैण्ड नहीं करते वे मटक–मटक कर नाचे–गाने के अलावा और कुछ नहीं करती।

विकास – लगता है तुम्हारी अक्ल का तो दिवाला ही निकल गया। कोइ बात कहो तो सोच–समझकर कहा करो। यह क्या मुह मे जो भी आये बोल देती हो।

ममता – । (चुप्पी साध लेती है)

विकास – अरे किसी की इज्जत न कर सको न सही लेकिन बेइज्जती तो न करो।

ममता – किसकी इज्जत करनी किसकी न करनी यह मेरा अपना सोच है। और हा एक बात कहे देती हू, अपनी निम्मी–सिम्मी को बोल दीजिए उन्हे यदि मुह मारना है तो कोई और घर देखे।

विकास – फ्रिज मे से ठडे पानी की बोतल निकालकर पी लेना क्या मुह मारना हो गया ? ऐसी बचकानी बाते कहकर किसी की निन्दा करना अच्छी बात नहीं है।

ममता – तो आपकी कौनसी यह अच्छी बात है कि एक्स्ट्रा क्लास के लिए केवल लडकियो को ही बुलाते हो ?

विकास – यह तुमको किसने कह दिया ?

ममता – दीवारो के कान नहीं होते क्या ? मुझसे आपकी कोई बात छिपी नहीं है। कॉलेज का टाइम ओवर होने के बाद आप वहा एक घटे के लिए क्या एक्स्ट्रा क्लास नहीं लते ?

विकास – एकदम गलत। किसी ने तुम्हारे गलत कान भरे हैं।

ममता – यही सही। लेकिन यह तो पक्की बात है यहा आने वाली उन दोनो लडकियो का मन साफ नहीं है।

विकास – बातो से तो यही जाहिर होता है कि असली मैल तो तुम्हारे मन मे हैं।

ममता – आप तो यही कहेगे। कभी अपने भीतर भी झाककर देखा है ?

विकास – देखा है कई बार।

ममता – रहने दो। अपनी बुराई किसी को नजर नहीं आती।

विकास – तुम्हे तो आती है ?

ममता – मेरे मे बुराई यही है कि मैं सच्ची बात कहे बिना नहीं रहती। अब किसी का बुरा लगे तो लगे।

विकास – रुको नहीं। कुछ न कुछ कहती चलो।

ममता – कहना क्या है ? एक बात सुन लीजिए। आईन्दा आप उस मैडम के यहा अब अकेले नहीं जायगे। मैं भी साथ चलूगी। यदि आपने मेरी यह बात नहीं मानी तो सोच लीजिए, मैं कुछ भी कर सकती हू।

विकास – यह जानते हुए भी कि किसी भी आडे समय उसके साथ सहयोग करना मेरा नैतिक कर्त्तव्य है।

ममता – मेरी भावनाओ की कद्र करना क्या यह आपका नैतिक कर्तव्य नहीं है ? और फिर किसी अकेली औरत के घर आपका अकेले जाना यह भी क्या नैतिकता की परिभाषा में आता है ? मुझे इतनी नासमझ मत समझिये। पानी का बहाव किधर जाता है मैं सब जानती हू।

विकास – तुम कुछ नहीं जानती सिवाय लडाई–झगडे के।

ममता – असली बात को दबाइये मत। मैं पूछती हू, मुझे मैडम के घर साथ ले जाने आपको आपत्ति क्या है ?

विकास – हर समय साथ ले जाना सभव नहीं है।

ममता – फिर देखती हू, आप कैसे जाते हैं ?

विकास – तुम्हारा यह कैकेयी का रूप मुझे अपने पथ से कभी विचलित नहीं कर सकता।

ममता – तो फिर ठीक हैं। आप अपना काम कीजिए और मैं अपना। (कहकर अन्दर चली जाती है)

विकास – (आवाज देकर) ममता–ममता अरे मेरी बात तो सुनो।

ममता – (अन्दर से ही) मुझे अब कुछ नहीं सुनना।
(विकास सोफे पर बैठकर क्षुब्ध हो उठता है)

∞

तीन

(शाम का समय। नवीन का वही ड्राइंग रूम। फोन की घंटी बजती है कि नवीन व्हील चेयर पर अन्दर से आता है।)

नवीन – (फोन उठाकर) हेलो .. कौन महिमा अभी भी ऑफिस मे ही हो क्या .. काम तो क्या है वैसे ही पूछ रहा हू भोलाराम सब्जी लेने गया है......चेतन ....वह अभी थोडी देर पहले ही सोया है... दिन भर क्या किया......खेलता रहा और क्या.... अच्छा–अच्छा ..आ रही हो तो जरा गोल मार्केट होकर आना अरे वहा से एक वैशाखी लानी है.. सोचता हू, कल से उसके सहारे चलने की चेष्टा तो करू हा–हा ... वहा एक–दो दुकानो मे यही सामान मिलता है.....समझ गई न ... अच्छा तो जल्दी आना...।

(कहकर फोन रखता है कि बाहर से भोलाराम हाथ में सब्जी का थैला लिये हुए आता है।)

भोलाराम – बाबूजी ममता बहन आपसे मिलने आयी है।

नवीन – कहा है ?

भोलाराम – बाहर खडी है।

नवीन – तो अन्दर बुलावो न ?

(भोलाराम वापस बाहर जाकर ममता को बुलाकर लाता है)

ममता – नमस्ते भाई साहब।

नवीन – नमस्ते। अरे बाहर क्यो खडी रह गई ?

ममता – वैसे ही।

नवीन – बैठो। क्या पीयोगी ? ठडा या गर्म ?

ममता	–	नहीं अभी कुछ पीने की इच्छा नहीं है।
नवीन	–	क्या बात है ? तुम्हारा चेहरा उतरा हुआ कैसे ?
ममता	–	नहीं तो।
नवीन	–	मुझसे छिपावो नहीं। विकास से क्या फिर कोई नौंकझोंक हो गई ?
ममता	–	वो तो रोज होती है।
नवीन	–	लेकिन लगता है आज कुछ ज्यादा ही बात बढ गई। सच–सच बताओ क्या बात है ?
ममता	–	क्या बताऊ भाईसाहब ? मुझे अपने भाग्य पर अब भरोसा नहीं रहा। जीवन जो अब तक सजीदगी से चल रहा था उसमें अब कहीं–कहीं अनचाही रूकावटे आने लग गईं। सोचती हू, ऐसे कब तक चलेगा ? (कहती कहती कुछ रूआसी हो जाती है)
नवीन	–	दुखी मत होओ। ईश्वर चाहेगा सब ठीक हो जायेगा।
ममता	–	ईश्वर ही तो नहीं चाहता। वही तो मुझसे सख्त नाराज है।
नवीन	–	पगली ईश्वर कभी किसी से नाराज नहीं होता। दरअसल जो उसके ज्यादा नजदीक होता है उसे ही वह नाच नचाता है।
ममता	–	आप जो कहे मगर ।
नवीन	–	मैं तुम्हारी भावनाओं को समझता हू। यह भी जानता हू विकास इन दिनो तुमसे कटा–कटा सा क्यो रहता है।
ममता	–	मुझसे तो बात करने को भी उनके पास समय नहीं है।
नवीन	–	बच्चों की तरफ तो ध्यान देता होगा ?
ममता	–	कहा ? महीना होने को आया बच्चों को तो उनसे मिलना ही दुर्लभ हो गया। और तो और छुट्टी के रोज भी वे पापा से मिलने को तरस जाते हैं।
नवीन	–	आखिर जाता कहा है कुछ पता है ?
ममता	–	अधिकाश समय तो प्राय उनका छात्राओ को थीसिस लिखवाने मे ही चला जाता है जो पी एच डी करने वाली होती हैं। बाकी अब कुछ दिनों से एक नई मैडम की हेल्प करने में लग जाता है।
नवीन	–	नई मैडम !
ममता	–	हा। कोई अरूणा मैडम है। पहले अलवर में इनके साथ लेक्चरार थी। अब प्रमोशन पर उसका तबादला भी यहीं हो गया।
नवीन	–	कुआरी है या शादीशुदा ?
ममता	–	सुश्री है। शादी हुई थी लेकिन उसके दूसरे दिन ही विधाता ने उसकी माग का सिन्दूर मिटा दिया।

नवीन — और फिर तो उसके साथ बहुत बुरा हुआ। न इधर की रही न उधर की।

ममता — त्रिशंकु बनकर रह गई।

नवीन — लेकिन विकास से अब वह किस किस्म की हेल्प लेना चाहती है ?

ममता — यह तो अब वही जाने। मुझे तो केवल इतना पता हे कि उस अरूणा के पीछे उन्होंने हम सबको भुला सा दिया है। सच कहती हू भाईसाहब उनकी बेवफाई देखकर मेरी तो अब जीने की इच्छा ही मर गई। (रोती हुई सी) न जाने मैंने ऐसा कौनसा पाप किया था कि आज हमें उसकी सजा भुगतनी पड रही है।

नवीन — रोओ नहीं ममता रोओ नहीं। घायल की गति घायल ही जानता है। अपनत्व के बदले उसने तुम्हे आसुओं की यह वसीयत देकर अच्छा नहीं किया। इसके लिए उसे एक दिन पछताना पडेगा।

ममता — क्या करू ? मेरी तो कुछ भी समझ मे नहीं आ रहा। अपने पापा के प्यार को तरसते बच्चो की ओर जब देखती हू तो कलेजा फटने सा लगता है।

नवीन — हु ऽऽ ! विकास कॉलेज जाता कब है ?

ममता — सुबह। कॉलेज टाइम से एक घटा पहले।

नवीन — और लौटता है .. ।

ममता — रात को नौ बजे के बाद।

नवीन — इतना समय तो नहीं लगना चाहिए ?

ममता — कहा न बाकी सारा समय अरूणा मैडम की हैल्प करने मे लग जाता है।

नवीन — तुमने यह नहीं पता लगाया कि अरूणा आखिर उससे चाहती क्या है ?

ममता — इसका पता चले भी तो कैसे ? इनसे पूछा तो बोले–उसके लिए कोई किराये का मकान ढूढ रहे हैं।

नवीन — यह तो केवल बहाना है। मकान ढूढने मे क्या इतना समय लगता है और वो भी हर रोज।

ममता — फिर मकान ढूढने में मदद करने को क्या एक ये ही मिले उसे ? स्टॉफ के दूसरे लोगो ने क्या आखे फेर रखी हैं ?

नवीन — बात जमी नहीं।

ममता — उनको अब यह समझाये कौन ?

महेश – (अचानक बाहर से आता हुआ) इसमे उसका कसूर नहीं है भाभी। मैडम कुछ है ही अलबेली। विकास के सिवाय वह किसी और को घास ही नहीं डालती। बात ही नहीं करती किसी से।

नवीन – अरे हा तुम भी तो विकास के साथ ही हो।

महेश – तभी तो कह रहा हू। अलवर मे अरूणा दो–एक साल विकास के साथ क्या रह ली उसके जीवन का ठेका ही ले लिया।

नवीन – क्या वह तुम से भी बात नहीं करती ?

महेश – जीजाजी क्यो चुटकी ले रहे हैं ? मेरे और उसके बीच तो आते ही छत्तीस का आकडा फिट हो गया था।

नवीन – वो कैसे ?

महेश – प्रिंसीपल साहब ने पहली बार परिचय कराते समय जब मेरे लिए बैचलर शब्द का प्रयोग किया तो उसको कुछ ऐसा लगा जैसे पास खडे किसी ने उसे कोहनी मार दी हो।

ममता – और यदि किसी ने सचमुच कोहनी मार दी हाती तो फिर क्या होता ?

नवीन – कोई न कोई झमेला कर बैठती।

महेश – एसी मेडम के लिए कोई बडी बात नहीं है।

ममता – बिल्कुल ठीक कहा आपने।

महेश – मुझे तो तब से उसने कभी नमस्ते ही नहीं किया।

नवीन – फिर तो लगता है उसमे गरूर कुछ ज्यादा ही है।

महेश – मुझस ता हमशा दूर–दूर ही रहती हैं

ममता – बस आपसे टली तो इनके गले लग गई।

महेश – सच तो यह है कि विकास भी क्या करे ? हर काम के लिए वह केवल उसी को कहती है। पुरानी जान–पहचान। 'ना' कर नहीं सकता और 'हा' करे तो मुसीबत।

ममता – अजी रहने दीजिए। अपने यार की इतनी तरफदारी मत करो। इसमे कोई तुक नहीं हैं। उसूलो पर चलने वालो को कोई नहीं डिगा सकता।

महेश – भाभी मेरी उसूल जीवन का कोई व्यावहारिक पक्ष नहीं है। सामने वाले को देखने के बाद ही उसूलो की व्याख्या होती है।

नवीन – यह तो तुम्हारा कहना ठीक है लेकिन जानबूझकर मुसीबत मोल लेने में कौनसी बुद्धिमानी है ?

महेश – जानबूझकर .. ?

ममता – ..और क्या ? यह जानते हुए भी कि किसी परायी अकेली औरत को आये दिन स्कूटर के पीछे बिठाकर जगह–जगह घूमाने से लोगों मे कानाफूसी जरूर होगी तो ऐसी सहानुभूति दिखलाने से क्या मतलब ? इससे इमेज कितनी डाउन होती है यह उन्होंने नहीं सोचा।

महेश – सोचा तो अवश्य होगा। लेकिन विवशता की जकड के आगेअनबोला होकर रह गया।

नवीन – अरे भई ऐसी भी क्या विवशता कि आज उसकी इन्हीं हलचलो के कारण उसके अपने घर में बच्चों की किलकरिया तक सहम गई।

महेश – क्या कह रहे हैं ?

नवीन – हकीकत बता रहा हू। बच्चे ही नहीं यह ममता भी आज उसकी उपेक्षा की शिकार बनती जा रही है।

महेश – फिर तो बात बहुत सीरियस है। इतना तो मैंने कभी सोचा भी नहीं। यह आशका तो जरूर रही कि उसके इस नये अध्याय से कुछ न कुछ नये गुल अवश्य खिलेंगे।

नवीन – खिलेंगे क्या खिल गये। आज यह ममता एक ऐसे मोड पर पहुच गई है जहा से पलायन की पगडडी शुरू होती है।

महेश – ना–ना। ऐसी पगडडी की ओर तो झाकना ही मत।

ममता – झाकना कौन चाहता है ? लेकिन वे तो मजबूर करने पर तुले हुए हैं।

महेश – भाभी आप भी कैसी बहकी–बहकी बाते करती हैं ? अजी यह निश्चित मानिये इतना सब कुछ होने के बावजूद भी विकास के पैर डगमगाने वाले नहीं हैं।

नवीन – यह विश्वास तो मुझे भी है। किसी भी हालत में वह कोई अमर्यादित काम तो कर ही नहीं सकता। फिलहाल आश्चर्य तो अभी इस बात का है कि उसकी आत्मा ने निर्लज्जता के इस नगे नाच के लिए उसे धिक्कारा कैसे नहीं ?

ममता – भाईसाहब आप माने या न माने मेडम ने उन्हे किसी न किसी तरह अपने चगुल में फसा रखा हैं।

नवीन – तुम क्या यह कहना चाहती हो कि विकास अपने रास्ते से भटक गया है ?

ममता – हा। बिल्कुल यही बात हैं।

महेश – कैसे ?

ममता – प्रलोभन के पासे मे उलझकर।

नवीन – मैं नहीं मानता। कोई भी प्रलोभन उस समय तक कोई मायने नहीं रखता जब तक चरित्र का कोई कोना खडित न हो।

ममता – यह केवल आपका अपना नजरिया है।

(इसी समय बाहर से वैशाखी का गठठर हाथ में लिये महिमा आ जाती है)

नवीन – लो महिमा आ गई। इसे पुरुष के मनोभावो की बहुत गहरी जानकारी है।

महिमा – (गठठर एक ओर रखती हुई) आते ही आपके खोजी मन ने मुझमे फिर से 'तलाश का काम शुरु कर दिया।

नवीन – अभी कोई तुम्हारी नहीं विकास के विषय में चर्चा चल रही हैं। मेरा कहना है विकास के व्यक्तित्व का तुमने जितना सूक्ष्म अध्ययन किया है उतना हम मे से और किसी ने न किया होगा।

महिमा – गलत। ममता ने जितना उसे समझा है उतना भला और कौन समझेगा ?

ममता – नहीं दीदी मैं उन्हे समझने मे चूक कर गई।

नवीन – सुन लिया। अब बोलो ।

महिमा – अच्छा पहले मुझे यह तो मालूम हो कि विकास का व्यक्तित्व कहा और किसके आडे आ रहा है ?

महेश – आडे किसी के नहीं आ रहा मात्र उसकी विवेचना हो रही है।

महिमा – इस सम्बन्ध मे तो मैं यही कहूगी कि वह खड–खड होकर भी अपने चरित्र को कहीं गिरवी रखने वाला नहीं है। मैं तो बल्कि यह कहूगी कि अपनी मौलिक पहचान बनाये रखने वालो में वह सबसे आगे है। इसके लिए वह कोई भी त्याग कर सकता है।

महेश – आपने तो यह लाख रूपयो की बात कह दी। मेरा वह जिगरी दोस्त है। मसखरी करते हुए कई बार मैंने उसके फूतरे भी बहुत उतारे। मगर यह मैं अच्छी तरह जानता हू कि फिसलन की जगह वह बहुत सावचेत रहता है।

नवीन – यह तो ठीक हैं। मेरी भी यही धारणा है। लेकिन कभी–कभी वह यह भूल जाता है कि कहीं–कहीं अधिक समझदारी मे किरकिर भी पड जाती है।

महेश – जरूर पडती होगी। कोई 'ना' नहीं है। किन्तु उसकी विशाल सहदयता के आगे उस किरकिर मे हानि पहुचाने वाले तत्व शून्य हो जाते हैं।

ममता – आप सबने उनको अपनी–अपनी तराजू में तोला धन्यवाद। उनका मूल्याकन अब केवल मुझे करना है केवल मुझे। मैं चलती हू।

महिमा – यह क्या ? मैं आयी और तुम चल दी ?

ममता – यह बात नहीं दीदी। बच्चे स्कूल से आकर मेरी राह देख रहे होगे। इसलिए जाना जरूरी है। उनको अकेले छोडने को मेरा मन नहीं करता।

नवीन – बच्चों के प्रति मा की ममता क्या होती है इसे क्या पता ?

महिमा – क्यो मैंने तो बच्चे जन्मे और पाले नहीं होगे ?

नवीन – *बच्चे जनना कोई अर्थ नहीं रखता। जहा तक पालने का प्रश्न* है तो बच्चे प्राय आया ही पालती हैं। बात तो है ममता की। ममता होती तो तुम बच्चो को कभी अपने से दूर नहीं करती।

ममता – भाई साहब का यह कहना तो सही है दीदी। बच्चों के बिना अपना मन कठोर करके नहीं रखा जा सकता। पता नहीं आप किस मिट्टी की बनी हुई है कि अपने कलेजे के टुकडो को बाहर भेज दिया।

महिमा – देखो जिस मिट्टी की तुम बनी हो उसी मिट्टी में मैं पली हू। दरअसल असली बात का तुम्हें पता नहीं है। इनके कहने का अर्थ केवल मैं ही समझ सकती हू।

महेश – जीजाजी तो महिमा जीजी के अतर की थाह ले रहे हैं और कोई बात नहीं है। आप कहीं उनकी बात का कोई गलत मतलब न निकाले।

महिमा – जब से बच्चे अपने ननिहाल गये है इनके मन मे बेवजह ही आशकाओ के शूल चुभ रहे हैं।

नवीन – झूठ मत बोलो। बच्चे ननिहाल गये नहीं उन्हे जबरदस्ती भेजा गया है। यह नहीं चाहती कि उनके कारण इसकी नोकरी मे कोई व्यवधान आये।

ममता – मतलब ?

नवीन – ममता से मुह मोडकर नोकरी की नाक रखने की नाहक एक जिद है।

महिमा – ममता तुम इनकी बातों में लगकर अपना समय खराब मत करो। बच्चे सचमुच ही बाट देख रहे होगे।

ममता – सच कहती हो। बातों का तो कोई अन्त ही नहीं है। मैं तो चलू।
(प्रस्थान)

महिमा – अभी क्या कहा जरा फिर से कहिये। अपनी नोकरी की नाक रखने के लिए मैंने बच्चों से मुह मोड़ रखा है ?

नवीन – और क्या ?

महिमा – (मुह बनाकर) और क्या !! क्या सच नहीं कह सकते थे कि नाना–नानी के कहने पर हमने उनको वहा भेजा है ? क्योंकि उनके और कोई नहीं है।

नवीन – लेकिन बीच–बीच मे उन्हे बुला तो सकती हो ?

महिमा – इसका उस बात से कोई लिंक नहीं है।

नवीन – तो फिर ?

महिमा – सच्ची बात तो यह है कि आपको मेरी नोकरी से नफरत हो गई है।

नवीन – अब छोडो इस बात को। बार–बार इस एक ही बात को लेकर राड बढाने से कोई मतलब नहीं है।

महेश – आप भी तो हर बात पर ततैया मिर्च लगाने से चूकते नहीं है।

नवीन – आगे से ध्यान रहेगा। हा तुम तो अब ममता के मसले को सुलझाने मे लग जाओ।

महिमा – लग जाओ क्या इसे ही सुलझाना है। इसी के कारण ही वह गलतफहमियो की गहरी खाई मे गिरती जा रही है।

महेश – मेरे कारण ?

महिमा – हा तुम्हारे कारण। कॉलेज मे विकास की गतिविधियो के बारे में तुम ही उसे कुछ न कुछ बताते रहते हो। वह ठहरी कानों की एकदम कच्ची। हर बात को उल्टे अर्थ मे लेती है।

महेश – (अपने कान पकडते हुए) हो सकता है मेरे कारण ही उन्हें अपनी घर की घडी मे सूई की नोक टेढी नजर आने लगी हो। जबकि मेरी नीयत उनको किसी तरह विकास के विरुद्ध उकसाने की कभी नहीं रही। केवल चूटिया चटकाने के लिए ही बातो की छुरछुरिया छोडता रहा। लडकियो को थीसिस लिखवाने के लिए एक्स्ट्रा क्लास लेने की बात हो चाहे अरूणा मैडम को हेल्प करने की। मुझे नहीं पता था कि बातो मे होली का सा हल्का रग भरने का यह दुष्परिणाम होगा।

महिमा – लेकिन उस पगली ने तो तुम्हारी हर रगभरी बात को अपने पर करारे व्यग्य की तरह समझ लिया।

नवीन — इसका कारण है उसकी नासमझी। वह हर बात को हमेशा एक ही पहलू से सोचती है।

महिमा — तभी तो अर्थहीन चिन्ताओ की चादर ओढकर मुह लटकाये बैठ जाती ..।

नवीन — .. और विकास को भी परेशानी मे डाल देती हैं

महेश — यह तो सरासर बेवकूफी है।

नवीन — अब तुम्हीं हो जो किसी तरह की पहल करके उसकी आखो के आगे पडे शक के साये को हटा सकते हो।

महेश — मैं इसके लिए पूरी कोशिश करूगा।

नवीन — बात बिगडने से पहले यदि उसे सभाल लिया जाय तो दोनो का बना–बनाया आशियाना ढहने स बच जायेगा।

महेश — मेरा विश्वास है ऐसी कोई नौबत नहीं आयेगी।

नवीन — जीते रहो।

महिमा — कल या परसों मैं भी उसके घर जाऊगी।

महेश — अच्छा अब यह तो बताइय पट्टा तो आपका कल ही खुलेगा न ?

नवीन — हा। विकास सुबह जल्दी ही आ जायेगा।

महिमा — तुम तो सीधे अस्पताल ही पहुचना।

महेश — टाइम ?

नवीन — यही कोई नौ बजे।

महेश — ठीक है।

महिमा — दोनो साथ होओगे तो कोई दिक्कत नहीं रहेगी।

महेश — अब आप चिन्ता ही न करे। मैं राइट टाइम पहुच जाऊगा। (प्रस्थान)
(महेश के जाते ही दोनों क्षण भर के लिए एक दूसरे को देखते हैं हल्का सा मुस्कराते हैं और फिर पीठ की तरफ पीठ करके बैठ जाते हैं)

∞

चार

(दोपहर का समय। विकास के घर की वही अगली बैठक। ममता मेज पर रखी अटैची में समान रख रही है कि बाहर से महिमा का प्रवेश।)

महिमा — अरे क्या कहीं बाहर जा रही हो ?

ममता — हा।

महिमा — कहा ?

ममता — मायके।

महिमा — अचानक कैसे ?

ममता — जहा नीरसता के पजे हर समय नोंचने लगें, वहा कौन ठहरना चाहेगा ?

महिमा — मैं समझी नहीं।

ममता — समझना भी नहीं। रिश्तों के चटकने का अहसास जो बहुत गहरा होता है ईश्वर करे किसी को न हो।

महिमा — ऐसे बहुरूपिये शब्दो को होठो पर लाने से पहले कुछ सोचा भी है ?

ममता — हा बहुत सोचा।

महिमा — तो निष्कर्ष क्या निकला ?

ममता — यही कि सोचने की एक सीमा होती हैं उससे आगे सोचना कमजोरी है।

महिमा — यानि कि ।

ममता — बन्धनों की चरमराती दीवारो पर विश्वास का महल खडा नहीं हा सकता।

महिमा — माना नहीं हा सकता।

ममता — तब ऐसे बेअर्थी बन्धनो को बनाये रखने में कोई तुक नहीं है।

महिमा — मगर यह तो मालूम हो कि बन्धनो के तार टूटने जैसी नौबत आखिर आई कैसे ?

ममता — इसका जवाब यदि उनसे पूछे तो ज्यादा अच्छा होगा।

महिमा — वे आयेगे तो उनसे भी पूछूगी। लेकिन पहले तुम तो अपनी बात बताओ।

ममता — बात क्या बतानी है दीदी ? तुम सब जानती हो।

महिमा — फिर भी ।

ममता — ...उन्होने मेरे पवित्र विश्वास को खडित कर दिया जो इस गृहस्थी की धुरी बना हुआ था।

महिमा — और विश्वास के बिना सुख ओर आनन्द सब परद के पीछे चले जाते हैं।

ममता — आनन्द की अनुभूति तो केवल विश्वास पर ही टिकी होती हैं।

महिमा — लेकिन जहा सुख की बात आती है तो वो इससे नहीं मिलता। उसका पौधा तो हमारे भीतर पनपता है और वहीं निरन्तर फूलता रहता है। दूसरे शब्दो मे सुख की खोज अपने भीतर करना ही सत्य की खोज है।

ममता — ये तो केवल दर्शन की बाते हैं। वस्तुस्थिति यह है कि विकास ने मुझे एक ऐसा दर्द दिया है जिसे शब्दो मे समेट नहीं सकती।

महिमा — स्पष्ट कहो कहना क्या चाहती हो ?

ममता — दीदी उनके जीवन मे मुझसे पहले भी कोई और देवी दस्तक दे चुकी है।

महिमा — क्या कह रही हो ?

ममता — ठीक कह रही हू। उनके आपसी सम्बन्धों की सुगबुगाहट अब मरे कानो म भी पहुच चुकी हैं।

महिमा — असली बात बताओ। यह तुमको किसने कहा ?

ममता — कहता कौन ? आहट होते ही क्या कान स्वत ही खडे नहीं हो जात ? पिछल एक महीने से जब वे रात को देर से आने लगे तभी मुझे उसके पीछे कुछ धुआ सा उठता दिखाई देने लग गया।

महिमा — धुए का मतलब तो कहीं न कहीं आग जरूर सुलगी हुई है ?

ममता — बिल्कुल यही बात है। एक दिन पूछा तो कोई न कोई बहाना बनाकर बात टाल गये। मगर जब महेश ने आकर आग की असलियत बताई तो मैं हैरान रह गई।

महिमा — उसने क्या बताया ?

ममता — कॉलेज मे एक नई मैडम आयी है अरूणा। जनाब उसके पीछे दीवाने हो रहे हैं।

महिमा — अरूणा कहीं वो तो नहीं है जो कभी मेरे साथ पढा करती थी ?

ममता — यह तो मैं कया जानू ? हो सकता है वही हो। हा इतना पता है कि विवाह के दूसरे रोज ही उसके पति को हार्ट अटैक हो गया था जिसके कारण भगवान को प्यारे हा गये।

महिमा — तब यह फिर कोई और है। यह तो फिर कोई विधवा है।

ममता — तभी तो हैरानी कुछ ज्यादा ही है।

महिमा — हाथों की चूडियों के अचानक टूट जाने के पीछे कोई राज तो नहीं है ?

ममता — इसका तो अब क्या पता ?

महिमा — आयी कहा से है ?

ममता — अलवर से। आने की मनाही नहीं है। सवाल तो यह है कि यहा आकर वह केवल उन्हीं से क्यो मिलती है ?

महिमा — हो सकता है वह यहा नई–नई आयी है। विकास के अलावा और किसी से विशेष जान–पहचान न हो। इसलिए यहा रहने-ठहरने के लिए विकास से कोई मदद चाहती हो।

ममता — एक मदद के साथ दूसरी मदद की माग होते फिर देर नहीं लगती।

महिमा — इससे इन्कार नहीं किया जा सकता। (विराम) महेश ने और क्या–क्या बताया ?

ममता — बातो की कतार तो बहुत लम्बी हैं। हर बात को तोल कर ही मैं फिर कोई निर्णय लेती हू उस पर। लेकिन इस नये मसले ने तो मेरे चित्त पर ऐसी चोट करी है कि मैं एकदम हतप्रभ रह गई।

महिमा — यह तो स्वाभाविक है। लेकिन तुम्हारा यह उतावलापन मेरी समझ मे उचित नहीं है।

ममता — तो आप ही बताइये मैं क्या करू ?

महिमा — ममता अपने को कभी ऐसी आग में मत झौंको कि अपना अस्तित्व ही झुलस जाय।

ममता — मगर मुझे तो अब चारों ओर आग ही आग नजर आ रही है।

महिमा — यह केवल तुम्हारा भ्रम है। आग हो भी तो उस पर काबू पा लेना कोई मुश्किल नहीं है।

ममता — कैसे ?

महिमा — समझदार हाकर भी तुम यह पूछती हो। अरे जिन्दगी सघर्षों का दूसरा नाम है। सघर्ष के बिना जीवन का कोई महत्त्व नहीं।

ममता — आप कुछ भी कहें मेरा मन अब यहा से उखड गया है।
(इसी समय बाहर से महेश आ जाता है)

महेश — अरे महिमा जीजी आप यहा ?

महिमा — क्यों मैं यहा नहीं आ सकती ?

महेश — यह बात नहीं है।

महिमा — तो फिर क्या बात है ? मौका मिला तो चली आयी। लेकिन तुम यहा कैसे ?

महेश — मैं तो विकास से मिलने अक्सर यहा आ जाया करता हू।

महिमा — लेकिन अभी तो वे घर पर नहीं हैं।

महेश — फिर वापस लौट जाता हू।

ममता — क्यों हम लोग यहा नहीं है ?

महेश — हैं क्यो नहीं लेकिन.. ।

महिमा — ... लेकिन क्या ?

महेश — विकास गया कहा है ?

ममता — कॉलेज मे नहीं है क्या ?

महेश — नहीं तो। वहीं से तो आ रहा हू।

ममता — फिर पता नहीं। जहा जाना होता है वहा चले गये होगे।

महेश — फिर तो मेरा यहा आने का मजा ही किरकिरा हो गया।

महिमा — ऐसी फिर क्या बात थी ?

महेश — उसे कोई खुशी का समाचार बताने आया था।

ममता — खुशी का समाचार ?

महेश — हा।

ममता — वो क्या ?

महेश — आप भी सुनोगी तो झूम उठोगी।

महिमा — बातो पर चासनी लगाने मे तुम बहुत होशियार हो।

ममता — अब बताओ न ?

महेश — तो सुनो। विकास की परेशानियों का अब अन्त हो गया।

ममता — कौनसी परेशानियो का ?

महेश — आप तो ऐसे पूछ रही है। जैसे कुछ जानती ही नहीं है।

ममता — अब पहेलिया तो बुझाओ नहीं। जो बात है वो बताओ।

महेश — अच्छा इतना तो आपको पता है कि विकास इन दिनो किस काम में उलझा हुआ है ?

ममता — अरूणा मैडम के लिए मकान तलाश करने मे।

महेश — बिल्कुल सही कहा।

महिमा — तो क्या उसे अब मकान मिल गया ?

महेश — हां। यह ममता भाभी के लिए किसी भी खुशी से कम नहीं है। क्यो भाभी ?

ममता — यह तो ठीक है। मकान मिल गया एक बला टली। लेकिन इस बात को इतना घुमा–फिराकर कहने की क्या जरूरत थी ?

महेश — सीधे से बकने मे मजा नहीं आता।

महिमा — जा रे ! बडा आया मजे का मजमा दिखलाने वाला ?

ममता — मकान मिला कहा ?

महेश — तिलकनगर मे।

ममता — उस नखराली को दिखला तो दिया ?

महेश — दिखला ही नहीं दिया उससे पैसे लेकर मकान मालिक को एडवास भी पकडा दिये।

ममता — अच्छा किया झझट मिटा।

महिमा — यह काम तो वाकई तुमने बहुत अच्छा किया।

महेश — यह मेहरबानी प्रिंसीपल साहब ने की है मैंने नहीं।

ममता — तब उनका तो इतने दिन कॉलोनिया का चक्कर लगाना बेकार गया। जगह–जगह झक मारने का कोई मतलब ही नहीं रहा। साथ–साथ घूमते हुए थकने का नाम नहीं ले रहे थे। ऐसों में ऐसी ही होनी चाहिए।

महिमा — तुम बेमतलब ही दिमाग क्यो खराब कर रही हो अपना ? मैडम को मकान मिल गया बात खत्म।

ममता — खैर मुझे तो इसी दिन का इन्तजार था।

महिमा — एक बात बताओ महेश तुम उस मैडम से शादी क्यों नहीं कर लेते ?

महेश — क्या SS ??

महिमा — वो इसलिए कि तुम हो नये विचारों के। उसे तलाश है एक जीवनसाथी की और तुम्हे भी कोई न कोई पार्टनर चाहिए। क्यो न दोनो मिलकर एक ही जीवन गाडी के पहिये बन जाओ।

महेश — जीजी !

महिमा — मामा और मामीजी को मनाने का जिम्मा मेरे पर छोडो। वे मेरा कहा कभी नहीं टालेगे।

महेश — आपका भी जवाब नहीं है जीजी। अरे यह सब कहने से पहले कुछ सोचा तो होता ?

महिमा — सोचे तो वो जिसे अनेको रास्ते नजर आते हो। मेरे सामने तो दो ऐसे मजबूत पहिये हैं जो गाडी मे जुडने के सुयोग्य हैं। बस सहारा देने की दरकार है।

ममता – हा महेश भैया बात तो दीदी की सही है। सपनों का अलग–अलग महल बनाने की बजाय दोनो खुशियो का कोई एक ऐसा महल क्यो न बनाये जो दूसरो के लिए प्रेरणा का प्रतीक बने।

महेश – क्यो मुझे उकसा रही हैं ?

महिमा – सोच लो। हम तुम्हे उकसा नहीं रही बल्कि यथार्थ से साक्षात्कार करने के लिए साहस बटोरने का आह्वान कर रही हैं।

महेश – ठीक हैं। सोचूगा। अभी तो चलता हू।
(प्रस्थान)

ममता – ताज्जुब है। यह महेश भैया भी किसी अजूबे से कम नहीं है।

महिमा – अपने आप मे एक अजूबा तो यह शुरू से ही रहा हैं दूसरा से एकदम अलग।

ममता – आये दिन यहा आकर मेरे कानो मे खतरे की घटी बजाते रहे और अब जब खतरे से मुक्ति मिलने का मौका आया तो खुद ही किनारा करने लगे ?

महिमा – कैसे ?

ममता – ये यदि उस अरूणा मैडम से शादी कर लेवे तो मेरे पर मडराने वाला खतरा हमेशा के लिए स्वत ही टल जाय।

महिमा – जिसे तुम खतरा समझ रही हो वो कोई खतरा है ही नही। सिवाय सौतन के उस भूत के जिसको तुमने स्वय बुलाकर अथवा महेश के कहने पर अपने दिमाग मे जगह दे रखी है। बस उसे ही तुम खतरा समझने की भूल कर रही हो।

ममता – नहीं दीदी ऐसी कोई बात नहीं है।

महिमा – झूठ मत बोलो। अब तो सचमुच यह लगने लगा है कि तुम्हारी समझदारी मे कोई छेद हो गया है।

ममता – कैसे ?

महिमा – देखो कुछ बाते ऐसी होती हैं जो बिना कहे ही समझ क दायरे मे आ जाती हैं। लेकिन तुम अभी तक उस तरफ से बेखबर हो।

ममता – दीदी यह पहेलिया बुझाने का वक्त नहीं है। प्लीज मेरी परेशानियों को समझने का प्रयास करो।

महिमा – क्या प्रयास करू ? परेशानियों को तो तुम खुद न्यौतां देने मे लगी हो। मैं तो यहा तक कहूगी कि अपने पैरो पर कुल्हाडी मारने की भी तुम खुद पहल कर रही हो।

ममता – मैं क्या पहल कर रही हू ?

महिमा – बैठो बताती हू। पहले यह बताओ तुम्हारे ख्याल से विकास इस समय कहा गये होगे ?

ममता – अब तो उनके लिए एक ही जगह है जहा घाट वालो का चस्का लगा हुआ है।

महिमा – फिर वही बात। तुम्हारी अक्ल कहीं घास चरने तो नहीं गई ?

ममता – क्या ?

महिमा – तुमने उनके लिए बिना सोचे–समझे ऐसी शर्मनाक राय कैसे बना ली कि उन्हें घाट वालो का चस्का लग गया ? पति के लिए अपने मुह से ऐसा बोल बोलते क्या तुम्हे जरा भी सकोच नहीं हुआ ?

ममता – सकोच तो तब हो जब मैं कुछ झूठ बोलू। मैं तो जो सत्य है वो बता रही हू।

महिमा – सत्य की परिभाषा भी जानती हो ?

ममता – परिभाषा ।

महिमा – . हा। सत्य एक ऐसा दीपक है जिसे कहीं पर भी रख दो दूर से ही टिम–टिमाता नजर आयेगा। प्रकाश उसका चाहे मन्द ही क्यों न हो।

ममता – इतनी गहराई मे मैं कभी नहीं उतरी।

महिमा – तब फिर विकास पर अविश्वास करने का क्या मतलब ? अरी पगली पति–पत्नी का प्रेम ही तो उनका विश्वास है और विश्वास ही उनका जीवन। (विराम) जानती हो विकास आज उनके काम से बैंक गये हुए हैं।

ममता – आप कहती हैं तो जरूर गये होगे। लेकिन मुझे तो जाते समय कुछ भी कहकर नहीं गये।

महिमा – शायद इसलिये नहीं कह गये हों कि तुम बात को नीचे तक उधेडे बिना नहीं रहती। फिर हर काम के लिए बताकर जाना कोई जरूरी नहीं है। कॉलेज जाते समय क्या कुछ कहकर जाते हैं ?

ममता – मेरा मतलब यह नहीं है।

महिमा – फिर क्या मतलब है ? तुमने जब अपनी पी एच डी की पढाई बीच ही मे छोडी तो क्या उसके लिए विकास से पूछा था ?

ममता – नहीं। उसके लिए उनस जिक्र करना मैंने मुनासिब नहीं समझा।

महिमा – क्यो ?

ममता – बात ही कुछ ऐसी थी। जिस प्रोफेसर के अडर मे पी एच डी कर रही थी उसके यहा जब मुझे यह महसूस हुआ कि वहा तो लडकियो को कुछ न कुछ समर्पण करने के लिए भी तैयार रहना पडता है तो मन खिन्न हो गया। ऐसी लज्जाहीन बाते बताकर मैं उनको किन्हीं उलझनो मे धकेलना नहीं चाहती थी। और न ही स्वय अपने को उलझाना चाहती थी।

महिमा — प्रोफेसर तो तुम्हारे पापाजी भी थे। उनके यहा भी तो छात्राए डाक्टरेट करने आती थीं। क्या वहा तुमने कोई ऐसी बात देखी ?

ममता — नहीं तो।

महिमा — फिर तुमने यह कैसे मान लिया कि सारे प्रोफेसर ऐसे ही होते हैं ?

ममता — .. । (कोई जवाब नहीं दे पाती)

महिमा — देखो ममता प्रोफेसरों के प्रति तुम्हारी यह धारणा ही तुम्हारे विषाद का बीज है। विकास को भी तुमने इस श्रेणी मे रखकर सोचा है। इसीलिए तुम आज अर्थहीन बातो मे भी अर्थ ढूढती रहती हो। यही तुम्हारी परेशानियो की मूल जड है।

ममता — लेकिन ..... ।

महिमा — ... लेकिन–वेकिन कुछ नहीं। आज तुम्हारे ही कारण विकास की बौद्धिक चेतना चरमरा रही है। अब वे ऐसे लगने लगे हैं जैसे गम की गुफाओ म कहीं शान्ति खोज रहे हो।

ममता — मैं नहीं मानती। आप कुछ भी कहे वे आजकल भटके हुए तो जरूर हैं।

महिमा — माना वे भटके हुए हैं। तुम्हारी कोई सुध नहीं ले रहे। अपने को किसी के यहा उधार रख चुके हैं। तो क्या इसका मतलब यह है कि तुम पीहर को पलायन कर जाओ ?

ममता — और कोई चारा भी तो नहीं है।

महिमा — क्यो पुस्तके पढकर क्या तुमने यही सीखा कि जुल्म के आगे जूती खोलकर नगे पैर भाग जाओ ?

ममता — कथनी और करनी मे बहुत अन्तर होता है।

महिमा — अन्तर होता नहीं पैदा किया जाता है। और हमे इसी अन्तर को पाटना है।

ममता — यह नामुमकिन है।

महिमा — क्यों ? पढाई के समय क्या हमें यह नहीं सिखाया गया कि औरत कभी अपने को अबला न समझे। सिखाया था या नहीं ?

ममता — सिखाया था।

महिमा — यह भी सिखाया गया कि औरत रूपी दुर्गा के आगे बडे–बडे शूरमा भी थूक चाटने लगते हैं।

ममता — हा यह भी सिखाया था।

महिमा — अब जब इसी सीख को कसौटी पर परखने का अवसर आया तो खुद ही थूक निगलने लग गई ? क्या काना से सुनी बातों को आखों से साक्षात नहीं देख सकती ?

ममता – कानो सुनी बातो को ?

महिमा – और क्या ? तुमने केवल सुना ही सुना है ? आखो से देखने की तकलीफ नहीं उठाई। यदि सचमुच ही ऐसी कोई बात है तो अपने प्रतिद्वन्द्वी को ललकारने में क्या हर्ज है ?

ममता – आपका मतलब उस अरूणा से है ? मैं उसके यहा जाकर उसका मन टटोलू ?

महिमा – अकेली अरूणा ही नहीं विकास जिस किसी भी घाट पर पानी पीने जाता है वहा भी ताल ठोक कर जाओ। देखो वहा की सही तस्वीर क्या है ?

ममता – यह मुझसे नहीं होगा।

महिमा – क्यो ? हार गई ? अरे पति द्वारा परोसी गई परिस्थितियो से समझौते का साहस जुटाना ही पत्नी की समझदारी है।

ममता – फिर तो मेरी समझदारी सिकुड गई समझो। इतना साहस मैं किसी भी हालत मे बटोर नहीं सकती।

महिमा – अच्छा तो यह बताओ तुम्हे क्या विकास से अब प्रेम नहीं रहा ?

ममता – क्यो नहीं ? प्रेम कभी मरता नहीं है।

महिमा – फिर ये बचकानी बाते क्यो करती हो ? यह जानते हुए भी कि प्रेम एक सात्विक भाव है और उसमें बिना शर्त के समर्पण होता है ।

ममता – मगर दीदी मेरी प्रेम एक तरफा नहीं होता।

महिमा – किसने कह दिया ? इसका मतलब है तुम प्रेम की परिभाषा ही नहीं जानती।

(इसी समय विकास बाहर से आ जाता है)

विकास – तभी तो यह अपनी एकतरफा चाहत को अपने में ही समेटे रहती है।

महिमा – विकास तुम्हे कुछ पता है ?

विकास – क्या ?

महिमा – यह अन्दर ही अन्दर गीली लकडी की तरह सुलग रही है।

विकास – मुझे पता है।

महिमा – फिर भी तुम अपनी मस्ती मे जीते हुए इसे अपनी हालत पर ही छोड रहे हो ?

विकास – नहीं तो।

महिमा – अनजान बनने की कोशिश मत करो। मुझे सब मालूम है। यह भी मुझसे छिपा नहीं कि तुम दोनो के वैवाहिक जीवन की चादर मे अब कुछ सलवटें पडनी शुरू हो गई।

विकास – यह सब इसी की वजह से। अपने को अपने तक सीमित रखना और अपने अलावा दूसरों के बारे मे सकुचित बने रहना यही इसकी हताशा का कारण है।

महिमा – मैं भी यही देख रही हू।

विकास – इसे दूसरों की बतायी बाते तो सच्ची लगती हैं लेकिन मेरी किसी भी बात पर इसको विश्वास नहीं होता।

ममता – इसलिए कि सच्चाई से आप हमेशा किनारा करते हुए चलते हैं।

विकास – यह तुमने कैसे जान लिया ?

ममता – आपकी बिखरी हुई बातो को समेटने से। और यह हकीकत है।

महिमा – किन्तु हकीकत उतनी खूबसूरत नहीं होती जितनी दिखाई देती है।

ममता – यह मुझे नहीं पता।

विकास – नहीं पता तो सुनो। जहा तक अरूणा के साथ हमदर्दी का सवाल है वो इसलिए कि वह मुझसे छाटी हे ओर मुझे अपना बडा भाई मानती है। इससे भी बडी बात यह कि वह एकदम अकेली और असहाय है।

महिमा – सुन रही हो ममता विकास क्या कह रहा है ?

ममता – **(कान कुचरती हुई)** सुन रही हू और कान का मैल भी निकाल रही हू।

विकास – रही बात यहा आने वाली निम्मी–सिम्मी की तो वे दोनो मेरी शिष्याए हैं। पवित्रता से परिपूर्ण।

महिमा – और भी कुछ पूछना है ?

ममता – नहीं।

महिमा – कान का मैल निकल गया ?

ममता – निकल गया।

महिमा – चलो रोग कटा।

ममता – (मुस्कराती सी) आज आप कॉलेज नहीं गये ?

विकास – इसलिए नहीं गया कि छुटटी ले रखी है।

ममता – किसलिए ?

विकास – भाईसाहब के काम से उनके बैंक गया था।

ममता – हो आये ?

विकास – हा।

महिमा – अच्छा हुआ तुम आ गये। वरना इसने तो आज अपने मायके जाने की पक्की ठान रखी थी।

विकास – किसलिए ?

ममता — वैसे ही। दो साल से उधर गई ही नहीं।

विकास — तो फिर हो आती।

ममता — कैसे हो आती ? पहले महिमा दीदी आ गई और अब आप आ गये।

विकास — नहीं। यह कहो कि बच्चे अभी स्कूल से लौटे नहीं। उनका इन्तजार करना था।

ममता — अब चुप हो जाइये। मैं चाय बनाकर लाती हू, तब तक आप दीदी से बाते कीजिए।

महिमा — अरे ना–ना मैं अब रूकने वाली नहीं हू। ऑफिस लौटने से पहले एक दफे घर भी होकर आना है। वैसे ही काफी देर हो गई।

विकास — घर एक दफे जरूर हो आइये। नहीं तो आपको भी मेरी तरह कहीं भाईसाहब के तीर का निशाना नहीं बनना पड़े।

महिमा — ठीक कहा आपने। पहले उनको ही सभाल आती हू। शाम को मुझे अस्पताल भी जाना है एक दफे फिर चैकअप करा लू। अच्छा चलती हू।

(प्रस्थान)

ममता — दीदी ने पहले ध्यान नहीं दिया। समय पर चैक अप करा लेती तो आज यह हालत नहीं होती।

विकास — शरीर भी अब कुछ बेढब सा दिखने लगा है।

ममता — क्या करे ! इन्हे तो हर मोर्चे पर जूझना पड़ता है।

विकास — ऐसे केसेज मे सतर्कता बरतनी बहुत जरूरी है।

ममता — भगवान करे ऐसी हालत किसी की न हो।

विकास — खैर बच्चे आने वाले हैं तब तक तुम जाने की तैयारी कर लो।

ममता — कहा ?

विकास — अपने मायके और कहा ?

ममता — अब वहा जाने का विचार ढा दिया है।

विकास — क्यो ?

ममता — इसलिए कि आप आ गये हैं।

विकास — सच ?

ममता — और नहीं तो । (कहती कहती होठो पर मुस्कान बिखरने लगती है कि विकास सतोष की सास लेता है।)

✪✪

पाच

(सुबह का समय। नवीन का वही ड्राइग रूम। नवीन फर्श पर बैठा पैरो की एक्सरसाइज कर रहा है। अन्दर से महिमा दूध की गिलास लेकर आती है।)

महिमा – (मेज पर गिलास रखती हुई) एक्सरसाइज करके दूध पी लीजिए।

नवीन – । (महिमा की बात पर कोई ध्यान नहीं देता)

महिमा – सुना नहीं ?

नवीन – नहीं पीना।

महिमा – मुझे नहीं पता। यह गिलास यहा रखी हैं कभी भी पीजिए। दूध आपको पीना हैं।

नवीन – कह दिया न नहीं पीना।

महिमा – क्यो नहीं पीना ? जरा बताइये तो मुझे।

नवीन – नहीं बताता। तुम कौन होती हो यह सब पूछने वाली ?

महिमा – आपकी अर्द्धांगिनी। इस घर की मालकिन। और बताऊ ?

नवीन – मैं तुम्हारी किसी भी बात को मानने के लिए बाध्य नहीं हू।

महिमा – वचनबद्ध तो हैं ?

नवीन – वो कैसे ?

महिमा – फेरे लेते समय पडितजी के सामने यह सकल्प किया था कि मैं अपनी धर्मपत्नी की हर उचित बात मानने का वचन देता हू। दिया कि नहीं ?

नवीन – तो इससे क्या हुआ ?

महिमा – क्या हुआ ! आप अपने वचन को तोड नहीं सकते।

नवीन – तो ठीक है। गिलास रख दी न।

महिमा – रख दी।

नवीन – अब यहा से खिसको।

महिमा – क्यो खिसकू ? मैं तो यहीं बैठूगी।

नवीन – किसलिए ? क्या काम है यहा ?

महिमा – कुछ भी नहीं। पर मेरी मर्जी मुझे यहीं बैठना है। आप मुझे बैठने से रोक नहीं सकते।

नवीन – क्यो मेरा दिमाग चाटने पर तुली हुई हो ?

महिमा – क्या ऽऽ ?? मुझे आपने क्या बिल्ली समझ रखा है जो किसी भी चीज को चाटती रहे ?

नवीन – देखो महिमा बेमतलब बहस तो मेरे से करो मत और चुपचाप अन्दर चली जाओ।

महिमा – अन्दर जाकर भला क्या करू ?

नवीन – यह तुम जानो।

महिमा – आप क्या नहीं बता सकते ?

नवीन – मैं क्या बताऊ ? घर मे सौ काम है। जाकर करो न ?

महिमा – कैसी बाते करते हैं ? आपको क्या जरा भी तरस नहीं आता मुझ पर ? मैं इस हालत में अब क्या काम करू ?

नवीन – काम नहीं तो आराम करो।

महिमा – अजी यह कहो न मेरा यहा बैठना आपको अच्छा नहीं लगता।

नवीन – तो यही समझ लो।

महिमा – समझ कया लो मैं तो पहले से ही समझी हुई हैं। सच बात तो यह है कि आप अब मुझे इस हालत मे देखना नहीं चाहते। वरना आप मुझे यहा से जाने के लिए नहीं कहते।

नवीन – हा–हा कहती रहो।

महिमा – क्या कहती रहू। कहूगी तो कडवी लगेगी।

नवीन – कडवी लगे तो तुम्हे उससे क्या ? तुम अपनी बक–बक चालू रखो।

महिमा – इसका मतलब है मैं कोरी बकबक कर रही हू ?

नवीन – । (कोई प्रत्युत्तर नहीं)

महिमा – जवाब क्या नहीं देते ?

नवीन – । (फिर भी कोई प्रत्युत्तर नहीं)

महिमा – लगता है मेरा अब कुछ भी कहना निरर्थक है। स्पष्ट है आपका मुझसे अब एलर्जी होने लगी है।

नवीन – कहती रहो। मैं सुन रहा हू।

महिमा – जब से यह हादसा हुआ है आप मेरी हर बात को काटने मे लगे हुए हैं।

नवीन – बिल्कुल गलत। यह कहो कि तुम्हारे सोच में अब अन्तर आ गया है

महिमा – कैसे ? क्या इस घर को मैं अपना घर नहीं समझ रही या आपको कुछ और समझने लग गई ? जरा बताइये क्या अन्तर देखा है आपने मुझम ?

नवीन – यह मुझसे न पूछो तो अच्छा है।

महिमा – तो किससे पूछू ? और हमारे बीच मे कौन है ?

नवीन – यह तो अपने आपसे पूछो।

महिमा – यह कहकर बात को टालिये मत।

नवीन – तो क्या तुम यह चाहती हो कि मैं इस घर की हर बात को ओपन करता रहू ?

महिमा – यह भला कौन चाहेगा ?

नवीन – तो फिर तुम चाहती क्या हो ?

महिमा – इस घर मे पहले जैसी शान्ति।

नवीन – वो रूठकर चली गई।

महिमा – कहा ?

नवीन – कहीं भी। अब वापस आने वाली नहीं है।

महिमा – अजी वो कहीं बाहर नहीं गई। हमारी जली–कटी बातो से तग आकर यहीं कहीं छिप गई है। जैसे ही प्रेम के पुष्प खिलते देखेगी फिर लौट आयेगी।

नवीन – प्रेम के पुष्प कभी खिलेगे तब न। अहकार और स्वाभिमान की लडाई के बीच मे वे कहीं नहीं खिलते।

महिमा – अहकार की तो यहा कोई बात ही नहीं है। रहा स्वाभिमान तो इसके साथ प्रेम का कभी कोई टकराव नहीं हुआ।

नवीन – यह तो मैं भी जानता हू।

महिमा – तो फिर अहकार को किसी मे कहीं देखा हो तो बोलो।

नवीन – देखा है और वो भी तुम्हारे अन्दर।

महिमा – मेरे अन्दर ?

नवीन – हा। पाडेजी का सानिध्य मिलते ही वो जो बढना शुरू हुआ अभी तक थमने का नाम नहीं ले रहा।

महिमा – क्या ऽऽ ?? अहकार और मुझमे ?

नवीन — और नहीं तो। तीसरा कौन है यहा ?

महिमा — आप जिस भाषा मे बोल रहे हैं वो मैं अब सब समझ गई। मैंने आपके साथ इतने वर्ष ऐसे ही नहीं गुजारे। आपकी हर रग से मैं वाकिफ हू।

नवीन — ओह तो इतने वर्ष साथ रहने की पीडा तुम्हें कचोट रही है ?

महिमा — पीडा तो उसे महसूस होती है जो सामने वाले को समझने में भूल कर गया हो। हा यह पीड़ा आपको हो सकती है।

नवीन — हुई हो तो इसका जिम्मेदार कौन है ?

महिमा — आप स्वय। आपका अहम्। आपका सडा गला सोच। आपकी सिमटती भावनाए और आपका खोखला स्वाभिमान।

नवीन — यह कहकर क्या तुम मेरे स्वाभिमान को ललकारना चाहती हो ? चाहती हो तो बोलो।

महिमा — मुझे किसी के स्वाभिमान पर प्रहार करके कोई ठेस नहीं पहुचानी। लेकिन मेरे अहकार की बात उछालकर अपने स्वाभिमान का ढिढोरा मत पीटो।

नवीन — महिमा तुम असली बात को पीछे धकेल कर अपने को बचाने की कोशिश कर रही हो।

महिमा — क्यो क्या मैं डरपोक हू ?

नवीन — नहीं। जिसमे अहकार होता है वह डरपोक नहीं हो सकता। तभी तो पूछता हू—अहकार जब स्वाभिमान पर हावी होता है तब क्या अनचाही परिस्थितिया पैदा नहीं होगी ?

महिमा — इस सवाल के पीछे आपकी कपोल कल्पित धारणाओ के सिवाय और कुछ नहीं है। आप अपने भीतर छिपे चोर को बाहर निकाल दे तो कोई समस्या ही न रहे। (विराम) पद की गरिमा और उसका रूतवा कभी अपनो से अधिक नहीं हो सकता। आप बैंक मैनेजर हैं। लाभ—हानि से पूरी तरह परिचित हैं।

नवीन — यह कागजी सोच केवल तुम्हारा है हर किसी का नहीं। (विराम) पिंजड मे कैद परिस्थितियो से मैं ही अकेला जूझता हू। तुम उनके बारे मे क्या जानो ?

महिमा — धारणाअे को दिया गया कोई भी गलत मोड कभी सुखदायक नहीं होता।

नवीन — यह मुझे मत बताओ। धारणाओं मे मैं भी विश्वास नहीं रखता। किसी के बारे में कुछ पढने के लिए हकीकत के पन्ने ही काफी हैं।

महिमा – चाह वे पन्ने जगह–जगह से फटे हुए ही क्या न हो।
नवीन – सभल जाओ महिमा सभल जाओ। जिन्दगी को खुली किताब न बनाओ कि उसे पढने वालो के सिर शर्म से झुक जाये।
महिमा – मैं कब चाहती हू उसे खुली किताब बनाना। मैं तो उसे पति–पत्नी की निजी डायरी समझती हू जिसे केवल वे ही लिख–पढ सके। लेकिन आप हैं कि इसके पन्नो को बेमतलब ही हवा मे उछाल रहे हैं।
नवीन – मैं उछाल रहा हू या तुम ?
महिमा – आप उछाल रहे हैं।
नवीन – मैं नहीं तुम उछाल रही हो। मैं पूछता हू, लोगो के बीच आज जो तरह–तरह की मनगढन्त कहानिया गढी जा रही है उसका लक्ष्य आखिर किसकी ओर है ?
महिमा – कौनसी कहानिया ? मैंने तो किसी के मुह से नहीं सुनी। आपने कहीं कोई सुनी हो बताइये।
(विकास का प्रवेश)
विकास – क्या बात है ? बातो के धमाके अपने आप थम गये या मेरे आने से सन्नाटा छा गया ?
महिमा – यह तो इन्हीं से पूछो।
नवीन – मैं क्या बताऊ ?
महिमा – शीतयुद्ध की शुरूआत तो आपने ही की थी।
विकास – शीतयुद्ध !
महिमा – हा। हमारे बीच कुछ अरसे से एक ऐसा शीतयुद्ध चल रहा है जिसके कारण हम खाली समय में भी अपने जबानी हथियार चलाते रहते हैं।
नवीन – जबकि हथियारो की लडाई मे हानि की सभावनाए विपुल रहती हैं।
महिमा – शुक्र करो कि अभी तक कोइ आहत नहीं हुआ।
नवीन – फिर भी युद्ध तो युद्ध ही है।
विकास – और यह काफी दिनो से चल रहा है।
नवीन – हा।
विकास – फिर तो अब तक युद्धविराम हो जाना चाहिए था।
नवीन – वैसे अब युद्धविराम सा ही है।
विकास – कहा ? अभी मेरे आने तक तो हथियारो की टकराहट सुनाई दे रही थी।

नवीन – यो तो महज दिल बहलाने के लिए। क्यों महिमा ?
महिमा – आप कभी गलत तो कह ही नहीं सकते।
विकास – चलो यह मान लेते हैं अभी युद्ध विराम हो रखा है। क्यों ठीक है ?
नवीन – वैसे मैंने तो युद्ध जैसा कोई काम ही नहीं किया।
महिमा – तो मैंने भी कभी पहल नहीं की इसमे उलझने की।
विकास – फिर भी युद्ध जैसे हालात तो उत्पन्न हो ही चुके थे। बस इतनी गनीमत समझो कि किसी के म्यान से तलवार नहीं निकली।
नवीन – ठीक कहते हो। इन दिनो वाकई यहा कुछ ऐसा–वैसा घटना चालू हो गया कि राड बढन की स्थिति पैदा हो गई है।
महिमा – मैं नहीं मानती।
नवीन – तुम्हारे मानने या न मानने से क्या होता है ? सच तो सच ही है। हम दोनों की नाव के बीच में कोई ऐसा छेद हो रहा है जिससे निराशा का पानी अन्दर घुसने लगा है।
विकास – नाव तो दोनों की एक ही हैं
नवीन – तभी तो जिम्मेदारी कोई भी अपने सिर पर नहीं ले रहा। बल्कि एक–दूसरे पर थोपने की कोशिश हो रही है।
महिमा – यह केवल नाविक की धारणा है। उसके साथ बैठने वाला ऐसा कुछ नहीं सोचता।
विकास – भाभी बात तो इसमें नाविक की ही मानी जायेगी। नाव का खेवनहार तो वही हैं। छेद होने की जानकारी भी उसी से मिलती है।
महिमा – फिर तो जल्दी से कोई उपाय सोचिये। पानी यदि अधिक भर गया तो नाव के डगमगाने का खतरा पैदा हो जायेगा।
नवीन – तुम्हे भला इसकी चिन्ता कब से होने लगी ? तुम तो उसकी केवल उपभोक्ता हो।
महिमा – उपभोक्ता नहीं उसकी भागीदार हू
नवीन – तभी तो नाव की यह हालत हैं
महिमा – इसम नाविक की कमजोरी है।
विकास – लगता है युद्धविराम पूरी तरह लागू नहीं हुआ।
नवीन – अब तक कोई मध्यस्थ नहीं रहा इसलिए।
विकास – मध्यस्थता के लिए आप यदि चाहें तो मैं अपनी सेवाए दे सकता हू।
महिमा – दरअसल यह हमारा आपसी मामला है। और सवेदनशील भी है। इसमे मध्यस्थ तो कोई होना ही नहीं चाहिए।

नवीन – क्यो नहीं होना चाहिए ?

महिमा – इसलिए कि हमारे अन्दर की बातो का मध्यस्थ से कोई सरोकार नहीं है। यह कोई कश्मीर की समस्या नहीं कि आप बतौर पाकिस्तान किसी तीसरे की मध्यस्थता की वकालात करे।

विकास – फिर तो मामला मुझे यह तनावपूर्ण लगता है।

महिमा – तनाव की स्थिति केवल इनकी हठधर्मिता के कारण पैदा हुई।

विकास – इस बारे में नवीन तुम्हारा क्या कहना है ?

नवीन – यह झूठ बोलती है। सच तो यह है कि मेरे प्रति इसका रवैया अब कुछ आक्रोशी होता जा रहा है।

महिमा – मेरा नहीं आपका। आप ही हरदम गुस्से से तमतमाये रहते हैं।

नवीन – ठीक है ठीक है। इस मसले को अब यहीं विराम दो। (बात को एकदम नया मोड देते हुए) अरे हा मैं तुम्हे बधाई देना तो भूल ही गया। ममता का मामला शान्त हुआ बधाई हैं।

विकास – यह बधाई तो तुम हमारी भाभी को दो। इन्होने ही उसमे मुख्य भूमिका अदा की थी।

नवीन – रहने दो। जिससे अपना घर ही नहीं सभलता वह दूसरे के घर को क्या सवारेगी ?

विकास – तुम कुछ भी कहो मैं तो उसका सारा श्रेय इन्हीं को दूगा।

महिमा – आप इनके कहने का तात्पर्य नहीं समझ रहे। आप दोनो के मामले को ये अपनी ही अन्तर्कथा से जोड़ रहे हैं। जबकि दोनो की स्थितियों मे मूलभूत अन्तर है।

नवीन – क्या अन्तर है ?

महिमा – उसमे सन्देह का साया किसी तीसरे पर पड रहा था और यहा यह साया केवल मेरे ऊपर केन्द्रित है।

नवीन – इसके पहले कि मैं कुछ बोलू, तुम जरा सन्देह के साये को स्पष्ट कर दो।

महिमा – क्या स्पष्ट कर दू ? आपका यही तो कहना है कि ट्रक–दुर्घटना के बाद मैं आपके प्रति कुछ ज्यादा ही उदासीन हो गई हू। इसके पीछे सन्देह का जो साया मडरा रहा है वो आप ही की उपज है।

नवीन – बीज तो तुमने ही डाला हैं। नोकरी के बहाने पाडेजी के साथ आये दिन राजधानी की सैर करना ।

विकास – ..रुकिये–रूकिये। यह कोई तर्क नहीं है। पाडेजी हा या कोई और नोकरी करनी है तो अपने अधिकारी के साथ दौरे पर तो जाना ही पडेगा।

महिमा — वहा कोई सैर करने नहीं जाता।
नवीन — जाता है तो कहेगा कौन ?
महिमा — क्या SSS ???
नवीन — उछलो मत।
विकास — नवीन मैं सोचता हू, मेरा यहा ठहरना अब उचित नहीं हैं।
नवीन — क्यो नहीं है? तुम यहीं ठहरो। यह तो नहीं चाहती लेकिन मैं चाहता हू कि तुम्हारी उपस्थिति में ही हम दोनो का सच आमने-सामने आये।
महिमा — मैं पूछती हू, हमारे बीच मे कहीं कोई क्या झूठ छिपा हुआ है ? छिपा हुआ है तो कहा ?
नवीन — कहा नहीं छिपा है ?
महिमा — तो बताइये न। उसे सामने लाओ।
नवीन — धीरज रखो। झूठ के पाव हमेशा कमजोर होते हैं। लडखडाकर जल्दी ही सामने आ जायेगे।
विकास — देखिये धूल की परत जम जाय तो उसे झाड-पौंछकर जिन्दगी के आईने को फिर से चमका कर रखने मे ही समझदारी है।
महिमा — यह बात तो आप इन्हे समझाओ।
विकास — यह तो दोनो के समझने की बात है। सुखद भविष्य पति-पत्नी का हमेशा करीब का सपना रहा है उसे बिखरने मत दो।
नवीन — मानी तुम्हारी बात। लेकिन यह बताओ सपनो के सच को करीब सरकते हुए क्या किसी ने देखा है ?
विकास — तुम भी नवीन हर बात को केवल एक ही नजरिये से देखते हो।
महिमा — और रोना ही किस बात का है ?
विकास — कहीं आप दोनो के हाथ की लकीरे एक-दूसरे को काटने के लिए तो नहीं है ?

(अचानक महिमा की आखो के आगे कुछ अधेरा सा घिरने लगता है कि विकास आगे बढकर उसे सहारा देता है।)

नवीन — क्या हुआ ?
विकास — पता नहीं। लगता है कोई चक्कर आ गया। (कहकर महिमा को सोफे पर लिटाता है)
नवीन — ममता को जरा फोन करके तुरन्त बुला लो। इसे अब अस्पताल ले जाने का समय आ गया है।

(विकास उठकर ममता को फोन करता है। उधर नवीन अपना माथा पकडकर कुछ सोचने लगता है।)

∞

छ.

(दोपहर का समय। विकास के घर की वही अगली बैठक। ममता व्हील चेयर पर महिमा को इधर से उधर घूमा रही है।)

महिमा – जीवन की यदि कोई सबसे बडी तपस्या है तो वो है आत्ममथन। उसके बाद ही आदमी जान पाता है कि वह कहा और किस रूप मे खडा है।

ममता – आपका इशारा किसकी तरफ है मैं जान गई।

महिमा – जानने से क्या होता है ? इशारो का जबाब इशारो से मिले तब न।

ममता – वो भी मिल जायेगा। भाईसाहब अपनी हताशा की वजह अब जान चुके। सभव है वे भी आत्ममथन की प्रक्रिया से गुजरे हों। तभी तो वे अब कुछ बदले–बदले से नजर आ रहे हैं।

महिमा – तुमने उनको कहा देखा ?

ममता – मैंने नहीं उन्होने देखा था। कल शाम को पब्लिक पार्क मैं एक बैंच पर अनमने से बैठे थे।

महिमा – कोई बात हुई ?

ममता – हा। मिलने पर पहले आपका हाल–चाल पूछा। फिर बोले–समय पर ऑपरेशन नहीं होता ता अनर्थ हो जाता। सारे शरीर में जहर फैल सकता था।

महिमा – फैल जाता तो मुझे इस दुनिया से छुट्टी मिलती।

ममता – ऐसा न कहो। अब तो भाईसाहब को भी अहसास हो गया कि उन्होने आपके बारे मे जो सोचा गलत था। अब तो वे वह भी कहने लगे कि ईश्वर ने आपको बचाकर उनकी लाज रख ली।

महिमा — मुझे तो यही देखना था कि उनका भ्रम कब टूटता हैं।

ममता — भ्रम टूटा तभी तो तस्वीर साफ हुई।

महिमा — अब तो उनका अहम भी पिघल गया होगा।

ममता — अहम् पिघलने से ही विनम्रता उभरती है। उनका अब इस तरह विनम्र होना ही यह बात साबित करता है कि वे पहले जैसे अब दुराग्रही नहीं रहे।

महिमा — यह तो सचमुच खुशी की बात हैं।

ममता — बस हैरानी तो मुझे इस बात की हो रही है कि उन्होंने आपके प्रति अपने वर्षों के विश्वास को इतना जल्दी खडित कैसे होना दिया ?

महिमा — मस्तिष्क की कमजोर तरगे कभी–कभी रास्ते बदल लेती हैं।

ममता — क्या उन्हे यह कभी मालूम ही नहीं पडा कि आप पेट की गाठ से पीडित हैं ?

महिमा — यह पता हो जाता तो भला उनकी कमजोरियो को जानने का मुझे मौका कैसे मिलता ?

ममता — तो क्या आपने भी कभी उन्हे इस बारे मे नहीं बताया ?

महिमा — वो तो यह सोचकर कि दुर्घटना का दर्द ही अभी नहीं गया मेरी गाठ का सुनेगे तो सहन नहीं कर पायेंगे। इसीलिए उनको अपने रोग की कभी भनक नहीं लगने दी।

ममता — ओह तभी वे इसका गलतफहमी मे कुछ और ही मतलब लेते रहे।

महिमा — उनकी यह गलतफहमी ही तो मेरे लिए एक तमाशा बन गई।

ममता — यह सही है आदमी के पास जब कोई काम नहीं होता तो वह हरदम इधर–उधर की ही सोचता है।

महिमा — जिस तरह तुम यहा अकेली बैठी विकास के विषय मे बातो की हवाई उडानें भरा करती थीं।

ममता — पता नहीं उन दिनो तो मैं सचमुच ही बहक गई थी। आज जब उन निरर्थक बातो को याद करती हू तो अपने पर बहुत हसी आती हैं

महिमा — उनकी भी अब यही हालत हो रही होगी।

ममता — जरूर हो रही होगी। कहे नहीं तो क्या हुआ मन मे पछतावा तो होता ही हैं।

महिमा — यही नहीं अहसास होने पर कि अपनो पर बेवजह अविश्वास किया आत्मग्लानि भी हो सकती है।

ममता – और आत्मग्लानि से बडा कोई पश्चाताप नहीं है। कभी–कभी तो आत्मग्लानि इस कदर होने लगती है कि ।

महिमा – आगे मत बोलना।

ममता – खैर आत्मशुद्धि की इससे अधिक अच्छी और कोई प्रक्रिया या प्रतिक्रिया नहीं है।

(विकास का प्रवेश)

ममता – भाईसाहब फिर मिले ?

विकास – हा आज सुबह ही मिले। क्यो.. ?

ममता – वैसे ही। क्या कहा ?

विकास – अभी यहा आने के लिए कह रहा था।

महिमा – क्यों आखों पर से परदा हट गया ?

विकास – वो तो ऑपरेशन के दिन ही हट गया था। अब तो मानसिक द्वन्द्वकी परछाई उसके चेहरे पर उतरकर, बातो में भी दिखाई देने लगी है।

ममता – फिर भी यहा आकर दर्शाना उचित नहीं समझते। क्योकि यहा आने से उनका मान जो घटता है।

विकास – अब ऐसा कुछ नहीं है। यह बात होती तो अभी यहा की क्यो सोचता ?

ममता – अब तक क्या दीदी को देखने का उनका मन ही नहीं हुआ ?

विकास – यह तो उसके दिल से पूछो।

ममता – रहने दीजिए। असप्ताल से यहा आये आज बीस रोज हो गये एक दिन भी मिलने को नहीं आये। ऐसा भी क्या ?

विकास – बात को तो समझती नहीं और अपनी ही कहे जा रही हो। मैं पूछता हू, अस्पताल में क्या वह इनसे मिलने नहीं आया था ?

ममता – नहीं वहा भी नहीं आये। आठ दिन वहा रहीं भाईसाहब को मैंने एक दिन भी नहीं देखा।

विकास – फिर तुम्हें कुछ नहीं पता। वह तो ऑपरेशन की सच्चाइ सुनते ही बिफर पडा था। पश्चाताप के आसुओं से भीगा हुआ जब मैंने उसे अस्पताल की सीढियों पर चढते हुए देखा तो फौरन समझ गया कि वस्तुस्थिति से वह अवगत हो गया हैं।

ममता – तो फिर ऊपर वार्ड मे क्यो नहीं आये ?

विकास – अरे सुनो तो सही। उस समय मैंने ही उसे मना किया था कि अभी वह भाभी से नहीं मिले और वापस घर जाकर ईश्वर से इनके स्वस्थ होने की दुआए मागे। इनको तब तक होश नहीं आया था।

ममता — बाद मे भी तो नहीं आये।

विकास — वो भी मेरे कारण। सच तो यह है कि शॉक से वह इतना डिप्रैस हो चुका था कि उसका यहा आना उसके स्वास्थ्य के लिए अनिष्ट हो सकता था।

ममता — पूर्ण स्वस्थ तो अभी भी क्या होगे ?

विकास — नहीं अब वो बात नहीं हे।

महिमा — इतने दिन उनकी किसने देखभाल की होगी ?

विकास — क्यो भोलाराम था न वहा। और फिर महेश की डयूटी भी मैंने उसी दिन से उसके पास लगा दी थी।

महिमा — इतना सब कुछ हुआ आपने यहा कोई जिक्र ही नहीं किया। जबकि मैं तो अब तक यही सोचती रही कि किसी ने उनको असली बात अभी तक बताई ही नहीं होगी। इसीलिए शायद वे अपनी बात को पकडकर ऐठे हुए होगे।

ममता — दीदी आपको कया यह पहले ही पता था कि आपके प्रति उनकी निगाहो मे सन्देह का प्रतिबिम्ब छाया हुआ है ?

महिमा — यह भी कोई पूछने की बात है ? पिछले छ–सात महीनो से मैं यही तो देखती रही। मन का चोर किसी न किसी बहाने बाहर निकलने की जल्दबाजी मे मुह की चौखट पर प्राय आ ही जाता था।

ममता — फिर भी शान्त रहीं आप ?

महिमा — इसी में तो रस आ रहा था। उनका मन टटोलते वक्त जिस आनन्द की अनुभूति होती थी वो शब्दो मे कहने वाली बात नहीं है।

ममता — आप भी खूब हैं। हमको भी हमेशा अधेरे मे ही रखा। हम भी कुछ और समझने की भूल कर रहे थे।

महिमा — वो तो इसलिए कि मुझे तुम्हारा भी अपनत्व परखना था। सोचा किसी न किस दिन तो पूछोगी कि मेरे शरीर में यह बदलाव कैसा ? लेकिन तुम भी परीक्षा में फेल ही हुई।

ममता — इसमे कोई शक नहीं है। हा यह बात जुदा है कि अपनी ही उलझनों में फसी रहने से ऐसी बातों की तरफ मेरा अधिक ध्यान नहीं गया।

विकास — खैर अब तो नवीन के अन्दर का सारा मैल धुल गया। गलतफहमी की आग में काया जो झुलसने लगी थी उस पर भी असलियत की दवा काम कर गई।

महिमा – बैंक तो अभी क्या जाने लगे होगे ?
विकास – नहीं। एक महीने और नहीं जायेगा। तब तक शायद बैशाखियो की भी जरूरत न रहे।
महिमा – यह तो बहुत अच्छी बात हैं।
ममता – अब तो दीदी भाईसाहब आये उससे पहले आप भी तैयार हो जाइये।
महिमा – उन्हे आने तो दो। वैसे तैयार क्या होना है मुझे ? ऐसे ही चली चलूगी उनके साथ। रेस्ट यहा नहीं वहा ले लूगी।
विकास – भाभी एक बात के लिए तो हम आपको दाद ही देगे कि नवीन को आपने आखिर तक अपनी गाठ के बारे मे कुछ नहीं बताया। बल्कि हमे भी नहीं। इधर आपके पेट की गाठ अन्दर ही अन्दर बढती रही उधर नवीन के मन में आपके प्रति विश्वास का भाव घटता रहा।
ममता – बता देती तो उनकी और हमारी कमजोरिया कभी सामने ही नहीं आती।
महिमा – वैसे कमजोरी तो हर पुरुष में है। वह सोचता है औरत पर एकाधिकार के भाव तो उसे जैसे विरासत मे मिले हैं।
ममता – इसीलिए तो कोई भी पुरुष यह नहीं चाहता कि उसकी पत्नी सिवाय उसके किसी पराये की ओर झाकने का जरा भी दुस्साहस करे। गोया वह उसकी पत्नी नहीं कोई रखैल हो।
विकास – अच्छा यह बताओ क्या कोई पत्नी ऐसा चाहेगी कि उसका पति किसी ऐरगैर जगह पर भी मुह मारता रहे ?
ममता – नहीं ऐसा कोई नहीं चाहेगी।
विकास – तो फिर एकाधिकार की भावनाए तो स्त्री–पुरुष दोनो मे एक जैसी होती हैं।
महिमा – पुरुषो मे कुछ ज्यादा ही होती है।
विकास – वो तत्कालीन सामन्ती व्यवस्था के कारण। लेकिन अब ऐसी बात नहीं है। औरत को मा–बहन और बेटी मानने वालो की सख्या कहीं अधिक है। पैर की जूती तो उसे केवल वे ही समझते हैं जिनकी अपनी जूती नहीं होती।
महिमा – आपने सही कहा। ऐसे ही ज्ञानहीन पुरुषो के कारण नारी के साथ अशोभनीय वारदातों को अधिक शह मिलती है।

(महेश का प्रवेश)

महिमा — लो महेश आग या।

ममता — अरूणा मैडम के साथ वार्तो का सिलसिला शुरू हुआ या नहीं ?

महेश — यह तो विकास से पूछो। इसी ने ही मुझे जाल में फसाने का स्वाग रचा था।

विकास — मैं क्या करता ? मैंने तो महिमा भाभी की इच्छा का सम्मान किया है।

महिमा — इसमे गलत क्या है ? दोनों को किसी न किसी का हाथ तो पकड़ना ही था। यदि कोई दो सुपात्र अलग-अलग राहों से चलकर एक ही मजिल पर आकर ठहर जाय और फिर आगे की यात्रा एकसाथ शुरु करें तो इससे अधिक खुशी की और क्या बात हो सकती है ?

महेश — बस इससे आगे की बात आगे के लिए छोड़ दीजिए।

ममता — अच्छा आप तो अब यह बताइये भाईसाहब के क्या हाल हैं ?

महेश — हाल खुशहाल हैं। अभी थोडी देर पहले मैं उन्हीं के यहा था।

ममता — अब तो किन्हीं उलझनो में उलझे हुए नहीं हैं ?

महेश — नहीं। बिना सोचे-विचारे रास्ते से परे हटकर किसी अधेरे में खो जाना उन्हें अब बहुत खल रहा है।

महिमा — सारे दिन घर मे ही बैठे रहते हैं या कहीं बाहर भी निकलते हैं?

महेश — क्यो नहीं ? कल सुबह ही भोलाराम के साथ टैक्सी मे बैठकर बाजार गये थे। नई क्रॉकरी कुछ किचन के आइटम्स अपने लिए सफारी सूट का कपडा आपके लिए बनारसी साडी और बैडशीटस वगैरह न जाने क्या-क्या परचेजिग करके लाये थे। आज ड्राइग रूम मे नये कर्टेन लगवाये हैं।

ममता — मतलब दीदी के स्वागत की तैयारिया हो रही है।

महेश — जो भी समझो।

ममता — ठिठका हुआ प्यार फिर से अगडाइया ले रहा है। क्यो दीदी ?

महिमा — बिल्कुल ठीक। इससे अच्छा आपबीती सुनाने का अवसर तुम्हे और कब मिलेगा ?

विकास — यह तो आप दोनो जाने। हा इतना मैं जरूर कहूगा कि आज आप दोनो की जिन्दगी का नया दौर शुरु होने जा रहा है।

ममता — मुझे तो बहुत खुशी है।

महिमा — क्यो नहीं तुम्हारे सिर से एक बला जो टल रही है।

ममता — दीदी SS ?? ऐसी बात न कहो।

महिमा — मैं गलत नहीं कह रही। इतने दिन किसी मरीज की सेवा करना सहज नहीं है। मासिक वेतन वसूलने वाली अस्पताल की नर्स भी

अब तक ऊब गई होती। जबकि उसकी डयूटी इसी काम के लिए ही होती है।

महेश – जीजी का कहना सही है। अस्पताल मे केवल डयूटी से बधी सेवा ही मिलती है। और यहा अपनत्व की अमृतधारा बरसती हैं।

विकास – बरसती नहीं बहतीं है।

महेश – कुछ भी समझो।

ममता – यह तो आपका बडप्पन है जो ऐसी बात कह रहे हैं।

महेश – बडप्पन की बात नहीं है भाभी। वस्तुस्थिति यही है कि जीजी को यहा आकर एक नया जीवन मिला है। इसके लिए आपके योगदान को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

(इसी समय बाहर से भोलाराम आता है)

विकास – क्या बात है भोलाराम ?

भोलाराम – यहा बाबूजी नहीं आये ?

विकास – नहीं। यहा तो नहीं आया।

भोलाराम – फिर कहा चले गये ?

महिमा – चेतन कहा है ?

भोलाराम – वह भी उनके साथ है। दोनो न जाने कब बाहर निकल गये।

महिमा – तुम कहा थे ?

भोलाराम – पीछे लॉन में पानी दे रहा था।

महेश – तो फिर वहीं–कहीं होगे। या आस–पडास मे किसी के यहा चले गये होगे।

भोलाराम – पडौस मे तो किसी के यहा कभी जाते ही नहीं।

विकास – उसे इधर आना था। हो सकता है घर से वह इसीलिए पैदल ही चल पडा हो।

भोलाराम – महेश भैया आये थे तब कह तो रहे थे कि मेमसाहब से मिलने जाना है।

महेश – चिन्ता न करो। धीरे–धीरे चलते हुए इधर ही आ रहे होगे फिर।

विकास – मुश्किल से पन्द्रह–बीस मिनट का रस्ता ही हैं।

भोलाराम – लेकिन मुझे यहा आते समय बीच मे कहीं नजर नहीं आये।

विकास – कहीं किसी के पास ठहर गये होंगे ?

महेश – और तो कुछ नहीं चेतन उनके साथ हैं। उसका ख्याल रखते–रखते कहीं कोई टक्कर न खा जाय। बैशाखी के सहारे घर के अहाते मे घूमना तो और बात है। मगर सडक पर चलना बहुत कठिन हैं।

ममता – सडके भी तो यहा की रामजी से मिली हुई हैं।
महेश – तभी तो। ऐस उवड–खावड रास्ते मे वैशाखी जरा भी कहीं टेढी–तिरछी पड़ गई तो सभलना मुश्किल हो जायगा।
भोलाराम – फिर जाकर देखता हू।
महेश – शार्टकट समझकर कहीं पार्क के साथ वाली गली से न आ रहे हो। जरा उधर भी देख लेना।
भोलाराम – अच्छा जी।
विकास – वैसे ज्यादा परेशान होने की बात नहीं है।
(भोलाराम का प्रस्थान)
महिमा – हमारा भोलाराम कितना काम करता है। ढेर सारा घर का काम और चेतन की चिन्ता वो अलग।
महेश – मैं भी यही देख रहा हू। सारे दिन चकरी की तरह घूमता रहता है।
ममता – भाईसाहब का तो पूरा ध्यान रखता हैं
महिमा – उनका तो इसके बिना कोई पत्ता ही नहीं हिलता।
ममता – आप भाग्यशाली हैं कि ऐसा ईमानदार नोकर मिला।
महिमा – इसमे तो कोई दो राय नहीं। यह भोलाराम न होता तो मैं घर की चारदीवारी से कभी बाहर ही नहीं निकल पाती।
ममता – ठीक कहती हो ? चेतन को सभालने के लिए कोई न कोई तो घर मे रहना ही चाहिए।
महिमा – तभी तो कहती हू, आज जो कुछ हू, इसी के कारण हू। वरना घर मे बैठी चेतन को बस चुटकले सुनाती रहती।
ममता – चेतन वैसे सीधा तो वहुत है।
महिमा – हा किसी को ज्यादा परेशान नहीं करता।
विकास – जिन्दगी उसकी कितनी बोझिल है यह देखो। अपने मेही सिमटकर रह जाना आदमी के लिए सबसे बडा अभिशाप है।
महेश – पर किया क्या जाय ? पूर्वजन्म के कोई पाप हे जो भुगत रहा है।
ममता – मुझे तो देखते ही दया आती है।
महिमा – परमात्मा ने न जाने क्यों उसके साथ ऐसी घिनौनी मजाक करने की सोची।
ममता – उसकी माया वही जाने।
विकास – उसके माथे पर पडी बदनसीबी की रेखाए कोई नहीं मिटा सकता।
ममता – दीदी यह तो आप ही की हिम्मत है कि ऐसे अपग देवर की देखभाल ही नहीं कर रही उसे अपनत्व देने मे भी कोई कमी नहीं रखती।

महिमा – यह तो देवर है। यदि अपना बच्चा होता तो एसी हालत मे क्या उससे मुह मोड लेती ? सच्ची बात तो यह है बीमार और असहाय को सहारा देने में जो सुख मिलता है वह और कहीं नहीं मिलता।

विकास – (ममता से) क्या समझी ? भाभी से कुछ सीख लिया करो।

महेश – जीजी की महानता के आगे सब नतमस्तक हैं।

(इसी समय बाहर से नवीन चेतन और भोलाराम आ जाते है)

भोलाराम – बाबूजी आ गये।

महिमा – बीच मे कहा रह गये थे ?

भोलाराम – एक दुकान पर गुलदस्ता लेने के लिए रूक गये।

चेतन – (आगे बढकर महिमा को गुलदस्ता भेंट करता हुआ) भा भी ..।

महिमा – (अपनी छाती से लगाती हुई) आओ चेतन कैसे हो ?

चेतन – ठी क हू।

नवीन – कहने लगा भाभी को लेने के लिए मैं भी साथ चलूगा।

विकास – अच्छा किया।

महिमा – लेकिन इतनी दूर आने की यह तकलीफ क्यो उठाई ? मैं अभी उधर ही आ रही थी।

ममता – भाईसाहब के यहा आने का कुछ अपना अलग ही महत्त्व है।

नवीन – नहीं। जिन्दगी की किताब से अब यदि अतीत के पन्ने पलट कर देखू तो इसका कोई महत्त्व नहीं है।

महेश – जीजाजी पुरानी बातो को किसी गठरी मे बाधकर कहीं अलग रख दीजिए। भूल जाइये अब बीते हुए कल को।

नवीन – ठीक कहते हो। सकीर्ण सोच की वजह से बेचैनी के तूफानी समुद्र में मेरा अस्तित्व जो फिसलने लगा था अब वह सभल गया है।

विकास – यानि कि मेरे विश्वास की विजय हो गई। मैं आज बहुत खुश हू।

नवीन – यह तो महिमा की महिमा का असर है। इसके अस्पताल जाने के बाद अधेरी रात के वक्ष पर सन्नाटे के हस्ताक्षर देखते ही मैं समझ गया एक अधूरा आदमी दुनिया में कुछ नहीं कर सकता।

विकास – मगर अब तो समय का साया हट गया। अब तो अपने को अधूरा मत समझो।

नवीन – नहीं। अब यदि ऐसा समझता तो लगडी टाग का बसेरा फिर बिखर गया होता।

विकास — फिर तो तुम्हारे हाथ मे रखा यह गुलदस्ता अब भाभी के हाथ मे होना चाहिए।

नवीन — अरे यह तो मैं भूल ही गया। अन्दर की गाठ खुलने और दुरस्त होने की खुशी मे यह लो खुशबू बिखेरता फूलो का गुलदस्ता। **(कहकर महिमा को जैसे ही गुलदस्ता भेंट करता है कि तालियों की गडगडाहट से जहा मच गूजने लगता है वहा मन्द पडते प्रकाश के साथ परदा भी धीरे धीरे नीचे गिरने लगता है।)**

∝